Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 46

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

16 रबीउल अव्वल 1441 हिजरी कमरी 14 नबुव्वत 1398 हिजरी शमसी 14 नवम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं हमेशा इसी ख़्याल और फ़िक्र में रहता हूँ कि मेरे दोस्त हर किस्म के आराम और सुविधा से रहें। यह हमदर्दी और यह ग़म खाना किसी दिखावे और बनावट के कारण से नहीं बल्कि जिस तरह माता अपने बच्चों में से हर एक के आराम तथा सुविधा के फ़िक्र में डूबी रहती है चाहे वे कितने ही क्यों ना हूँ। इसी तरह मैं अल्लाह के लिए दिल सोज़ी और ग़मख़्वारी अपने दिल में अपने दोस्तों के लिए पाता हूँ

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दोस्तों के लिए हमदर्दी और ग़मख़्वारी

हज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

असल बात यह है कि हमारे दोस्तों का सम्बन्ध हमारे साथ अंग की तरह से है और यह बात हमारे दैनिक के तजुर्बा में आती है कि एक छोटे से छोटे अंग जैसे उंगली ही में दर्द हो तो सारा बदन बेचैन और बेक़रार हो जाता है। अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि ठीक इसी तरह हर वक़त और हर समय मैं हमेशा इसी ख़्याल और फ़िक्र में रहता हूँ कि मेरे दोस्त हर किस्म के आराम और सुविधा से रहें। यह हमदर्दी और यह ग़म खाना किसी दिखावे और बनावट के कारण से नहीं बल्कि जिस तरह माता अपने बच्चों में से हर एक के आराम तथा सुविधा के फ़िक्र में डूबी रहती है चाहे वे कितने ही क्यों ना हूँ। इसी तरह मैं अल्लाह के लिए दिल सोज़ी और ग़मख़्वारी अपने दिल में अपने दोस्तों के लिए पाता हूँ और यह हमदर्दी कुछ ऐसी व्याकुलता की हालत पर है कि जब हमारे दोस्तों में से किसी का ख़त किसी किस्म की तकलीफ़ या बीमारी के हालात पर आधारित पहुंचता है तो तबीयत में एक व्याकुलता और घबराहट पैदा हो जाती है और एक ग़म शामिल हो जाता है और जूँ-जूँ लोगों की अधिकता होती जाती है उतना ही क़दर यह ग़म बढ़ता जाता है और कोई वक़्त ऐसा ख़ाली नहीं रहता जबकि किसी किस्म का फ़िक्र और ग़म शामिल ना हो। क्योंकि इतने अधिक लोगों में से कोई ना कोई किसी ना किसी ग़म और तकलीफ़ में पीड़त हो जाता है और इस की सूचना पर इधर दिल में वेदना और बेचैनी पैदा हो जाती है। मैं नहीं बतला सकता कि कितना समय ग़मों में गुज़रता है। चूँकि अल्लाह तआला के सिवा और कोई हस्ती ऐसी नहीं जो ऐसे दुखों और फिक्रों से नजात दे। इसलिए मैं हमेशा दुआओं में लगा रहता हूँ और सबसे प्रथम दुआ यही होती है कि मेरे दोस्तों को दुखों और ग़मो से सुरक्षित रखे , क्योंकि मुझे तो उनके ही फिक्र और दुख ग़म में डालते हैं। और फिर यह दुआ सामूहिक रूप से की जाती है कि अगर किसी को कोई दुख और तकलीफ़ पहुंचा है तो अल्लाह तआला इस से इस को नजात दे। सारी सरगर्मी और पूरा जोश यही होता है कि अल्लाह तआला से दुआ करूँ। दुआ की क़बूलीयत में बड़ी बड़ी उम्मीदें हैं।

क़बूलीयत दुआ के उसूल

बल्कि मेरे साथ मेरे मौला करीम का साफ़ वादा है कि اُجِیۡبُ کُلَّ دُعَآئِکَ मगर में ख़ूब समझता हूँ कि कुल्ल से मुराद यह है कि जिनके ना सुनने से हानि पहुंच जाती है लेकिन अगर अल्लाह तआला तरबीयत और सुधार चाहता है तो रद्द करना ही दुआ का कूबूल होना होता है। कई बार इन्सान किसी दुआ में नाकाम रहता है और समझता है कि ख़ुदा तआला ने दुआ रद्द कर दी हालाँकि ख़ुदा तआला उस की दुआ को सुन लेता है और वह स्वीकार होना रद्द होने की अवस्था में ही होता है क्योंकि उस के लिए छुपी हुआ और हक़ीक़त में बेहतरी और भलाई उस के रद्द ही में होती है। इन्सान चूँकि अन्जाम को जानने वाला नहीं है और दूर-अँदेश नहीं बल्कि ज़ाहिर परस्त है इसलिए इस को उचित है कि जब अल्लाह तआला से कोई दुआ करे और वह बज़ाहिर उस के मुफ़ीद मतलब नतीजा पैदा करने वाला ना हो तो ख़ुदा पर बदज़न ना हो कि उसने मेरी दुआ नहीं सुनी। वह तो हर एक की दुआ सुनता है

اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ (अलमोमिन:61) फ़रमाता है। राज़ और भेद यही होता है कि दुआ करने वाले के लिए ख़ैर और भलाई रद्द दुआ ही में होती है।

दुआ का उसूल यही है। अल्लाह तआला क़बूल दुआ में हमारे अंदेशा और इच्छा के अधीन नहीं होता है। देखो बच्चे किस क़दर अपनी माताओं को प्यारे होते हैं और वे चाहती है कि उनको किसी किस्म की तकलीफ़ ना पहुंचे लेकिन अगर बच्चे बेहूदा तौर पर इसरार करें और रो कर तेज़ चाक़ू या आग का रोशन और चमकता हुआ चिंगारा मांगें तो क्या माँ बावजूद सच्ची मुहब्बत और हक़ीक़ी दिलसोज़ी के कभी गवारा करेगी कि इस का बच्चा आग का अंगारा लेकर हाथ जला ले या चाक़ू की तेज़ धार पर हाथ मार कर हाथ काट ले ? हरगिज़ नहीं। इसी उसूल से दुआ का स्वीकार होने का उसूल समझ सकते हैं। मैं ख़ुद इस बात में एक तजुर्बा रखता हूँ कि जब दुआ में कोई भाग कष्ट वाला होता है तो वह दुआ हरगिज़ क़बूल नहीं होती है। यह बात ख़ूब समझ में आ सकती है कि हमारा इलम यक़ीनी और सही नहीं होता। बहुत से काम हम निहायत ख़ुशी से मुबारक समझ कर करते हैं और अपने ख़्याल में उनका नतीजा बहुत ही मुबारक ख़्याल करते हैं मगर अन्त में वह एक ग़म और मुसीबत हो कर चिमट जाता है अत: यह कि इन्सानी इच्छाएं सब पर सही नहीं कर सकते कि सब सही हैं। चूँकि इन्सान भूल और चूक से बना है इसलिए होना चाहिए और होता है कि कुछ ख़ाहिश कष्ट वाली होती है और अगर अल्लाह तआला उस को स्वीकार कर ले तो यह बार रहमत के मन्सब की स्पष्ट ख़िलाफ़ है। यह एक सच्ची और यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला अपने बंदों की दुआओं को सुनता है और उनको क़बूलीयत का सम्मान प्रदान करता है मगर व्यर्थ बात को नहीं। क्योंकि जोश नफ़्स की वजह से इन्सान अंजाम और नतीजा को नहीं देखता और दुआ करता है मगर अल्लाह तआला जो हक़ीक़ी भलाई चाहने वाला और अन्जाम को देखने वाला है इन कष्टों और बुरे नतीजों को समक्ष रखकर जो इस दुआ के अधीन दुआ के स्वीकार करने की अवस्था में पहुंच सकते हैं उसे रद्द कर देता है और ये रद्द दुआ ही उस के लिए क़बूल दुआ होता है। अत: ऐसी दुआएं जिनमें इन्सान हदसों और सदमों से सुरक्षित रहता है। अल्लाह तआला क़बूल कर लेता है मगर कष्ट वाली दआओं को बसूरत रद्द क़बूल फ़र्मा लेता है। मुझे यह इलहाम बार हा हो चुका है اُجِیۡبُ کُلَّ دُعَآئِکَ। दूसरे शब्दों में यूं कहो कि हर एक ऐसी दुआ जो अपनी वास्तविकता में लाभदायत और मुफ़ीद है क़बूल की जाएगी। मैं जब इस ख़्याल को अपने दिल में पाता हूँ तो मेरी रूह आन्नद और प्रसन्नता से भर जाती है। जब मुझे ये प्रथम समय में इलहाम हुआ क़रीबन पच्चीस या तीस वर्ष का अरसा होता है ,तो मुझे बहुत ही ख़ुशी हुई कि अल्लाह तआला मेरी दुआएं जो मेरे या मेरे लोगों के बारे में होंगी ज़रूर क़बूल करेगा। फिर मैंने ख़्याल किया कि इस मामला में कंजूसी नहीं होना चाहिए क्योंकि यह एक इलाही इनाम है और अल्लाह तआला ने मुत्तक़ीन के गुणों में फ़रमाया है وَمِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ(अल बक़र:4) अत: मैंने अपने दोस्तों के लिए यह उसूल कर रखा है कि चाहे वे याद दिलाएँ या ना याद दिलाएँ कोई बात बड़ी पेश करें या ना करें। उनकी धार्मिक और दुनयावी भलाई के लिए दुआ की जाती है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 89 से 92)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-15)

अगर लोगों और दुनिया के रहनुमाओं ने अपने सृष्टा और इस की सृष्टि के हुक़ूक़ की अदायगी की ज़िम्मेदारी को ना समझा तो दुनिया में एक बहुत बड़ी तबाही आएगी।

जिस पर क़ाबू पाना किसी के लिए भी मुम्किन ना होगा, आजकल हर कोई दूसरे की कमज़ोरियों की निशानदेही करता है कि अमुक का क़सूर है या अमुक की ग़लती है लेकिन अपने गिरेबान में कोई नहीं झाँकता, इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार अपने हुक़ूक़ की मांग करने की बजाय हमें दूसरों के हुक़ूक़ की अदायगी करनी चाहिए, यही एक ही हल है।

मस्जिद मसरूर(वर्जीनिया) के उद्घाटन के अवसर पर प्रैस कान्फ्रैंस और हुज़ूर अनवर की विश्व शान्ति के बारे में दुनिया को सुनहरी नसीहतें

हुज़ूर अनवर अमरीका के लिए एक रुहानी मर्हम हैं और अमरीका को इस वक़्त हुज़ूर अनवर की रहनुमाई और नेतृत्व की बहुत ज़रूरत है,आपकी कम्यूनिटी इस देश की तरक़्क़ी में बहुत अहम भूमिका अदा कर रही है इसलिए आपकी यहां तशरीफ़ लाने पर मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूँ, आपका तशरीफ़ लाना हमारे लिए गर्व का कारण है* (डाक्टर Katrina Lantos)

जमाअत ने गेम्बिया में जो स्कूल और हस्पताल खोले हैं इस का देश को बहुत फ़ायदा हुआ , जमाअत के स्कूल देश के बेहतरीन स्कूल हैं जमाअत अहमदिया हमारे देश में लोगों पर निहायत सकारात्मक असर छोड़ रही है, गेमबिया की हुकूमत और जमाअत अहमदिया के सम्बन्ध बहुत मज़बूत हैं उन्हीं सम्बन्ध के आधार पर में आज यहां हाज़िर हुआ हूँ*

(Hon.Dawda Federaयू.ऐस.ए में गीमबिया के ऐमबसडर)

मैं खासतौर पर हुज़ूर अनवर की सारी दुनिया में अमन के स्थापना के लिए कोशिश और जिस तरह आप उग्रवाद और अत्याचारों की मुज़म्मत कर रहे हैं इस को सराहता हूँ आपकी मज़हबी आज़ादी , इन्सानी हुक़ूक़ और जमहूरीयत के स्थापना का इरादा प्रशंसा योग्य है, आज हुज़ूर की यहां तशरीफ़ आवरी हमारे लिए गर्व योग्य है* (कांग्रेस मीन Gerry Connolly)

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मस्जिद मसरूर वर्जीनिया का उद्घाटन

आज प्रोग्राम के अनुसार साऊथ वर्जीनिया में मस्जिद मसरूर के उद्घाटन का प्रोग्राम था। बारह बजकर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और दुआ करवाई। इस के बाद साऊथ वर्जीनिया के लिए रवानगी हुई। मस्जिद बैयतुर्रहमान से साऊथ वर्जीनिया की दूरी 52 मील है।

आज का दिन जमाअत साऊथ वर्जीनिया के लिए बड़ा ही मुबारक और बरकतों वाला एक तारीख़ी दिन था। हर छोटा बड़ा, मर्द तथा औरत, जवान बूढ़ा ख़ुशी तथा प्रसन्नता से मामूर था। आज उनके घर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के मुबारक क़दम पहली बार पड़ रहे थे। ये लोग सुबह से ही मस्जिद मसरूर पहुंचना शुरू हो गए थे।

साऊथ वर्जीनिया की स्थानीय जमाअत के अतिरिक्त सिलीकॉन वैली, बे पॉइंट, लास एंजलीज़, कैलीफोर्निया, सयाटल,कांसास, सेंट लूईस, हीवसटन,ऑस्टन, डलास, मियामी, न्यूयार्क, न्यूजर्सी,ओशकोष और डेट्रॉइट की जमाअतों से जमाअत के लोग बड़ी दूर और लम्बा सफ़र तय कर के मस्जिद मसरूर के उद्घघाटन आयोजन में शिरकत के लिए थे।

लास अंजलीज़,सिलीकॉन वैली,बे पाओनट और सयाटल से आने वाले लोगों लगभग छ: घंटे जहाज़ का सफ़र तय करके पहुंचे थे।

इस के अतिरिक्त कैनेडा की जमाअतों टोरांटो, मिसी सागा, आटवा, कैलगरी, वेनकोवर और बैरी से भी जमाअत के लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या इस मस्जिद के उद्घाटन में शामिल होने के लिए पहुंची थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के आने से पहले जमाअत साऊथ वर्जीनिया के मर्कज़ मस्जिद मसरूर का बाहरी सेहन जमाअत के लोगों से भर चुका था। मर्द औरतों की कुल संख्या तीन हज़ार तीन सौ के लगभग थी। जिनमें से दो हज़ार तीन सौ लोगों अमरीका की विभिन्न जमाअतों से आए थे जबकि एक हज़ार के लगभग कैनेडा से आए थे।

लगभग दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ यहां तशरीफ लाए तो सारी फ़िज़ा नारों से गूंज उठी, बच्चियों के ग्रुपस ने स्वागत गीत और तराने पेश किए। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो सदर जमाअत साऊथ वर्जीनिया आदरणीय करीमुल्लाह कलीम साहिब और रीजनल मुबल्लिग़ सिलसिला फ़ारान अहमद रब्बानी साहिब ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा और मुलाक़ात का अवसर प्राप्त किया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मसरूर और जमाअत के इस सैंटर का निरीक्षण फ़रमाया।

इस सैंटर की यह इमारत नवंबर 2017 ई में ख़रीदी गई। यह एक चर्च की बिल्डिंग थी। ख़रीदने के बाद इस में थोड़ी renovation की गई। इस इमारत की ख़रीद पर पाँच मिलियन डॉलरज़ ख़र्च हुए और इस की renovation पर लगभग 75 हज़ार डालर ख़र्च हुए।

इस सैंटर का कुल क्षेत्रफल 17.6 एकड़ है। मस्जिद का कल छत वाला हिस्सा 22403 मुरब्बा फुट पर आधारित है। मस्जिद के साथ एक structure है जो 64 फुट ऊंचा है और आगे चल कर उसे नियमित मीनार में तबदील किया जा सकेगा।

मस्जिद के दो हिस्से हैं। एक ऊपर का हिस्सा है और एक नीचे का हिस्सा है। मस्जिद के ऊपर के हिस्सा में मर्दों का हाल है। जिसके एक हिस्सा में नियमित stage बना हुआ है और इसी के साथ एक बड़ी tv screenभी लगाया गया है। एक back stage आडीयो वीडीयो रुम भी है। एक छोटा किचन भी मौजूद है।

इस सैंटर में मर्दों और औरतों के नमाज़ पढ़ने के अलग अलग हाल हैं। मर्दों के नमाज़ के हाल में 500 के लगभग लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। एक lobby भी है जो मर्दों के लिए over flow के अतिरिक्त ज़याफ़त के तौर पर भी प्रयोग होती है।एक उच्च स्तर का आडीयो वीडीयो सिस्टम भी मस्जिद में लगाया गया है। मस्जिद में तीन stair well के अतिरिक्त एक elevator भी मौजूद है।

निचली मंज़िल पर औरतों के लिए नमाज़ का एक हाल है जिसमें 150 से अधिक नमाज़ियों की गुंजाइश है। इसी तरह मस्जिद के इस हिस्सा में कुल ग्यारह कमरे हैं जहां बच्चों की कक्षाओं के अतिरिक्त विभिन्न विभागों के दफ़्तर और

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

''जो शख़्स अल्लाह तआला के लिए मस्जिद तैय्यार करता है।

अल्लाह तआला भी इस के लिए जन्नत में वैसा ही घर तैय्यार करता है''(अलहदीस

''हमारी जमाअत यह ग़म सारे दुनयावी ग़मों से बढ़कर अपनी जान पर लगाए कि उनमें तक़्वा है या नहीं''

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम)

अल्लाह तआला अपने आगे झुकने वालों को भी ईमान और यक़ीन में बढ़ाता है।

आख़िरत पर यक़ीन ही अल्लाह तआला की इबादत की तरफ़ माइल करता है। ऐसी इबादत जो विशेष रूप से अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिए की जाए

हक़ीक़ी आबिद और मस्जिदों को आबाद करने वाला वही है जिसके दिल में आख़िरत के बारे में कभी शंका ना आए और अंजाम बख़ैर के लिए अल्लाह तआला के आगे झुका रहे

एक कोशिश से मस्जिद को आबाद करने की ज़रूरत है

मस्जिद का हक़ अदा करना और उसे जन्नत ले जाने का ज़रीया बनाना और इस की तैय्यार से जन्नत में एक घर बनाना एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

अगर किसी हस्ती का हमें ख़ौफ़ है तो वह ख़ुदा तआला का है।

''असल हक़ीक़त दुआ की वह है जिसके माध्यम से ख़ुदा और इन्सान के दरमयान सम्पर्क बढ़े।

''नमाज़ हज़ारों भूलूं को दूर कर देती है और अल्लाह तआला के सानिध्य प्राप्त करने का माध्यम है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों से पांचों समय नमाज़ों की अदायगी और दुआ की लतीफ़ हिक़्मतों का वर्णन, अहमदियों को हक़ीक़ी तक़्वा पर क़ायम होते हुए मस्जिदें आबाद की नसीहत

मस्जिद महदी, स्टरास बर्ग का उद्घाटन, उस की तैय्यार और कवाइफ़ का संक्षिप्त वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 अक्तूबर 2019 ई. स्थान - मस्जिद महदी, स्टरास बर्ग , (फ्रांस)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ
يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ

(अत्तौब: 18)

एक लम्बे अर्से के बाद अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया फ्रांस को यहां एक और मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है। यहां इस शहर स्टरास बर्ग (Strasbourg)मैं अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से नौमुबाइअईन और ग़ैर पाकिस्तानी अहमदियों की भी बड़ी संख्या है बल्कि तक़रीबन 75 प्रतिशत ग़ैर पाकिस्तानी हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इख़लास और वफ़ा में बढ़े हुए हैं। बहरहाल अल्लाह तआला ने यहां उन्हें एक मस्जिद प्रदान फ़रमाई है और अब यहां के रहने वाले अहमदी पहले से बढ़कर जमाअत के निज़ाम से जुड़ हो सकते हैं। अल्लाह तआला उन्हें तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाए।

यह आयत जो मैंने तिलावत की है जैसा कि आपने सुना उस का अनुवाद पढ़ता हूँ कि अल्लाह की मस्जिदों को तो वही आबाद करता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाता है और नमाज़ों को क़ायम करता है और ज़कात देता है और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता। अत: क़रीब है कि ऐसे लोग कामयाबी की तरफ़ ले जाए जाएं।

अल्लाह तआला ने मस्जिदें तैय्यार करने वालों और आबाद करने वालों की यह विशेषता बयान फ़रमाई हैं कि अल्लाह पर ईमान लाने वाले हैं अर्थात इस बात पर कामिल यक़ीन कि सब ताक़तों का स्रोत और मालिक ख़ुदा तआला की ज़ात है, बाक़ी सब तुच्छ है। अत: इस ईमान के हुसूल के लिए अल्लाह तआला के आगे झुकना और इस की इबादत बहुत ज़रूरी है। अल्लाह तआला अपने आगे झुकने वालों को भी ईमान और यक़ीन में बढ़ाता है। फिर आख़िरत के दिन पर यक़ीन भी अल्लाह तआला ने मस्जिद में आने वालों की ख़ुसूसीयत ,शर्त वर्णन की है क्योंकि आख़िरत पर यक़ीन ही अल्लाह तआला की इबादत की तरफ़ माइल करता है ऐसी इबादत जो विशेष रूप से अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए की जाए। इस बात को बयान फ़रमाते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

आख़रत पर ईमान का फ़ायदा यह है कि इस से अल्लाह तआला की मार्फ़त हासिल होती है और सच्ची मार्फ़त बग़ैर हक़ीक़ी ख़शीयत और ख़ुदा तआला के भय के हासिल नहीं हो सकती। आप फ़रमाते हैं कि आत: याद रखो कि आख़िरत के बारे में शंकाओं का पैदा होना ईमान को ख़तरे में डाल देता है और ख़ातिमा बिलख़ैर में शक पड़ है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 53-54)

अर्थात ख़ातिमा बिलख़ैर फिर यक़ीनी नहीं रहता, फिर यह बात नहीं रहती कि इन्सान ईमान पर क़ायम रहेगा। अत: हक़ीक़ी आबिद और मस्जिदों को आबाद करने वाला वही है जिसके दिल में आख़िरत के बारे में कभी शंका ना आए और अंजाम बख़ैर के लिए अल्लाह तआला के हुज़ूर झुका रहे। फिर फ़रमाया कि मस्जिदें आबाद वही कर सकते हैं या उन्हीं को मस्जिदों की तैय्यार करने का फ़ायदा है जो नमाज़ें क़ायम करने वाले हैं, इस बात का वादा करते हैं कि हमने ये मस्जिद सिर्फ इसलिए नहीं बनाई कि दुनिया को दिखा दें कि हमारी भी एक मस्जिद है बल्कि इस को पाँच वक़्त आबाद करना अब हमारा काम है। अल्लाह तआला ने यहां नमाज़ क़ायम करने वाले फ़रमाया है और क़ायम करने का अर्थ ही यह है कि जो जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने वाले हैं। फिर ज़कात की तरफ़ तवज्जा है, माली क़ुर्बानी की तरफ़ तवज्जा है तो मस्जिद आबाद करने वालों की ये गुण होने चाहिए कि ख़ुदा तआला के धर्म की इशाअत के लिए क़ुर्बानियां करें और अल्लाह

तआला के बंदों के हुक़ूक़ भी अदा करें और ये सब इसलिए है कि अल्लाह तआला का भय हमारे दिलों में बढ़े, उस की रज़ा के हुसूल के लिए हम भरपूर कोशिश करें। अल्लाह तआला फ़रमाता है ये सब कुछ करने वाले ही हैं जो अल्लाह तआला के नज़दीक हिदायत पाने वाले हैं या हिदायत पाने वाले लोगों में गिने जाऐंगे।

अत: हमें हमेशा यह दुआ करते रहना चाहिए और इस के अनुसार कोशिश करनी चाहिए और अल्लाह तआला के आगे झुकते हुए यह निवेदन करना चाहिए, नए आने वालों को भी और पुराने अहमदियों को भी, बल्कि पुराने अहमदियों की ज़्यादा ज़िम्मेदारी है और खासतौर पर पाकिस्तान से आए हुओं की कि वे इस बात का ज़्यादा ख़्याल रखें कि नए आने वालों के लिए उन्होंने अपने नमूने भी क़ायम करने हैं कि हमें हमारी मस्जिद की तैय्यारी के बाद इस सोच के साथ और अपनी व्यावहारिक हालतों को इस फ़रमान के अनुसार करते हुए मस्जिद आबाद करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़र्मा और हमें हिदायत पाने वाले लोगों में शामिल फ़र्मा। मस्जिद आबाद करने वालों के बारे में जो अल्लाह तआला का यह हुक्म है इस आदेश पर अपनी कमज़ोरीयों और सुस्तियों की वजह से अनुकरण ना कर के कहीं हम अपनी दुनिया तथा आख़िरत बर्बाद करने वाले ना बन जाएं। हम पर रहम करते हुए हमें भटकने से बचाए रखना और हमें सीधे रास्ते पर चलाए रखना। हमारी नीयतों को हमेशा साफ़ और नेक रखना। हम तेरा हक़ अदा करने वाले भी हों और इस इलाक़े में तेरे धर्म का पैग़ाम पहुंचाने वाले भी हों। हम इस मस्जिद की तैय्यार के साथ तेरे भेजे हुए मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के इरशाद के अनुसार इस मस्जिद को इस्लाम की तब्लीग़ का माध्यम बनाने वाले हों और अपना फ़ज़ल फ़रमाते हुए हमें अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद का वारिस भी बना जिस में आप ने फ़रमाया कि जो आदमी अल्लाह तआला के लिए मस्जिद तैय्यार करता है अल्लाह तआला भी इस के लिए जन्नत में वैसा ही घर तैय्यार करता है।(-सही अल-बुख़ारी अस्सलात बाब मिन बनी हदीस 450)अत: हमें हक़ीक़ी मोमिन बनाते हुए अपने फ़ज़लों से नवाज़ता चला जा।

इत: इन बातों के हुसूल के लिए सबसे पहले तो हर अहमदी को अपने नमाज़ों के जायज़े लेने चाहिऐं कि क्या उनकी पाँच वक़्त बाक़ायदगी से नमाज़ पढ़ने की तरफ़ ध्यान है और फिर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की तरफ़ द्यान है? सिर्फ इतना तो काफ़ी नहीं कि हमारी मस्जिद बन गई। जन्नत में घर बनाने के लिए तो इतना ही काफ़ी नहीं है कि मस्जिद बना ली, उस के लिए ईमान के साथ कर्म की भी ज़रूरत है, अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने की भी ज़रूरत है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में होने का हक़ अदा करने की भी ज़रूरत है। हर साल हज़ारों मस्जिदें मुस्लमान बनाते हैं लेकिन अगर उनमें फ़िर्कावारीयत के दर्स दिए जाते हैं, उनमें अल्लाह तआला के ख़ौफ़ और भय और अल्लाह तआला के बंदों के हुक़ूक़ की अदायगी के बजाय केवल व्यक्तिगत स्वार्थों या सिर्फ उसी फ़िर्क़े के हितों की बातें की जाती हैं या नई नई बिदअतें तथा कथित उल्मा पैदा कर रहे हैं जिनका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत से कोई सम्बन्ध नहीं तो वे मस्जिदें अल्लाह तआला के नज़दीक और इस के रसूल के नज़दीक जन्नत में ले जाने वाली मस्जिदें नहीं। अत: मस्जिद का हक़ अदा करना और उसे जन्नत ले जाने का माध्यम बनाना और इस की तैय्यार से जन्नत में एक घर बनाना एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और इस ज़िम्मेदारी को हर अहमदी को समझ कर फिर इस पर अनुकरण करने और इस का हक़ अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। और इस ज़माने में हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने एक हक़ीक़ी मुस्लमान बनने और इबादतों और अपनी मस्जिदों के हक़ अदा करने और अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा करने के बारे में जिस तरह बताया है उसे समझने और इस पर अनुकरण करने की ज़रूरत है। तब ही हम कह सकते हैं कि हम अल्लाह तआला पर दृढ़ और कामिल ईमान लाने वाले हैं, आख़िरत के दिन पर कामिल ईमान और यक़ीन रखते हैं। अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए अपनी नमाज़ों को क़ायम रखने वाले हैं और अपने माल क़ुर्बान कर के अल्लाह तआला के बंदों के हुक़ूक़ भी क़ायम करने वाले हैं और अगर किसी हस्ती का हमें ख़ौफ़ है तो वह ख़ुदा तआला का है। अल्लाह तआला की ख़शीयत ही हमारे दिलों में है क्योंकि हम इस से प्यार करने वाले हैं। किसी दुनियावी चीज़ से हमें ख़ौफ़ नहीं है, किसी दुनियावी चीज़ से हमें वह मुहब्बत नहीं जो हमें ख़ुदा तआला से है। हम अपने दुनियावी लाभों को अपने ईमान और अपने धर्म के लिए क़ुर्बान करने वाले हैं। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक हक़ीक़ी अहमदी बनने और ख़ुदा तआला का हक़ीक़ी अब्द बनने के लिए जो नसीहतें हमें फ़रमाई हैं उनमें से कुछ मैं पेश करता हूँ। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

अल्लाह तआला ने जिस क़दर कुव्वतें प्रदान फ़रमाई हैं हाथ पांव और बाक़ी चीज़ें, आँखें ज़बान हर चीज़ जो हमें प्रदान फ़रमाई है वह नष्ट करने के लिए नहीं हैं, वे नष्ट करने के लिए नहीं दिए गए, उनका उचित और जायज़ इस्तिमाल करना ही उनको बढ़ना है, इसलिए कि उनकी बढ़ाना हो और बढ़ना किस तरह होगी कि उनका जायज़ इस्तिमाल हो, उनका ग़लत इस्तिमाल ना हो। इसी लिए इस्लाम ने पौरुष्त्व के शक्तियां या आँख के निकालने की शिक्षा नहीं दी बल्कि उनका जायज़ इस्तिमाल और नफ़स की पवित्रता कराई है। यह नहीं कि आँखों से बद-नज़री करनी है तो इसलिए आँखें निकाल दो बल्कि उनका जायज़ इस्तिमाल चाहिए या पौरुष्तव की शक्तियां हैं उनको ख़त्म कर दो यह तो कोई चीज़ नहीं बल्कि उनको पवित्र करना, उनका पवित्र इस्तिमाल करना असल चीज़ है। फ़रमाया कि قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ और ऐसे ही यहां भी वर्णन फ़रमाया कि मुत्तक़ी की ज़िन्दगी का नक़्शा खींच कर आख़िर में बतौर नतीजा यह कहा है وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ मुत्तक़ी का नक़्शा खींचा पहले फ़रमाया قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ और फिर फरमाया कि وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ अर्थात वे लोग जो तक़्वा पर क़दम मारते हैं, ग़ैब पर ईमान लाते हैं, नमाज़ डगमगाती है फिर उसे खड़ा करते हैं अर्थात विभिन्न ख़्यालात नमाज़ में आते हैं फिर अल्लाह की तरफ़ तवज्जा करते हैं। ख़ुदा के दिए हुए से देते हैं, जो अल्लाह तआला ने नेअमतें दी हैं इस में से इस की राह में ख़र्च करते हैं। फ़रमाया कि बावजूद नफ़स के ख़तरों के बिला सोचे ुपछले और वर्तमान अल्लाह की किताब पर ईमान लाते हैं। अल्लाह ने कहा है कि सब किताबों पर ईमान लाओ तो ईमान लाते हैं और आख़िर में वे यक़ीन तक पहुंच जाते हैं। यही वे लोग हैं जो हिदायत के सिर पर हैं। वे एक ऐसी सड़क पर है जो बराबर आगे को जा रही है और जिससे आदमी सफलता तक पहुंचता है। यही लोग सफलता पाने वाले हैं जो मंज़िल मक़सूद तक पहुंच गए और राह के ख़तरों से नजात पा चुके हैं। फिर फ़रमाया इसलिए शुरू में ही अल्लाह तआला ने हम को तक़्वा की तालीम देकर एक ऐसी किताब हमको प्रदान की है जिसमें तक़्वा की नसीहत हैं । फ़रमाते हैं अत: हमारी जमाअत यह ग़म सारे दुनयावी ग़मों से बढ़कर अपनी जान पर लगाए कि उनमें तक़्वा है नहीं।

(उद्धरित मलफ़ूज़ात भाग 1पृष्ठ 35)

इन्सान किस तरह देखे कि इस में तक़्वा है या नहीं और मुत्तक़ी कौन लोग होते हैं इस की वज़ाहत फ़रमाते हुए आप ने फ़रमाया कि

''ख़ुदा के कलाम से पाया जाता है कि मुत्तक़ी वे होते हैं जो विनम्रता और विनय से चलते हैं।' बहुत नरमी है बहुत आजिज़ी होती है उनमें ''वे गर्वपूर्ण वार्तालाप नहीं करते।' अंहकार बिलकुल नहीं होता उनमें। ''उनकी गुफ़्तगु ऐसी होती है जैसे छोटा बड़े से गुफ़्तगु करे।' हज़ूर ने फ़रमाया कि ''हम को हर हाल में वह करना चाहिए जिससे हमारी नजात हो अल्लाह तआला किसी का ठेकेदार नहीं। वह ख़ास तक़्वा को चाहता है। जो तक़्वा करेगा वह उच्च स्तार को पहुँचेगा फ़रमाया कि ''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम में से किसी ने विरासत से तो इज़्ज़त नहीं पाई।' फ़रमाते हैं ''यद्यपि हमारा ईमान है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान्नीय पिता अब्दुल्लाह मुशरिक ना थे लेकिन उसने नबुव्वत तो नहीं दी।यह तो अल्लाह तआला का फ़ज़्ल था इन सदक़ों के कारण जो उनकी फ़ित्रत में थे।' अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की। ''यही फ़ज़ल के मुहर्रिक थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जो अबुल अंबिया थे उन्होंने अपनी सच्चाई तथा तक़्वा से ही बेटे को क़ुर्बान करने में दरेग़ ना किया। ख़ुद आग में डाले गए। हमारे सय्यद तथा मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही सिदक़ तथा वफादारी देखिए आप ने हर एक किस्म की बुरी तहरीक का मुक़ाबला किया। तरह तरह की मसीबतों तकलीफ़ों को उठाया लेकिन परवाह ना की। यही सिदक़ तथा वफादारी थी जिसके कारण अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया। इसीलिए तो अल्लाह ने फ़रमाया

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۔

(अल-अहज़ाब 57)

अल्लाह तआला और इस के समस्त फ़रिश्ते रसूल पर दुरूद भेजते हैं। हे ईमान वालो तुम दुरूद तथा सलाम भेजो नबी पर।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 37)

अत: हमें यही हुक्म है कि अगर दुआ की क़बूलीयत चाहते हो तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजो और बग़ैर दुरूद के की गई दुआएं आसमान तक नहीं पहुंचतीं, इन्सान कामयाबियां हासिल नहीं कर सकता। अत: इबादतों के स्तर बेहतर करने के लिए और अल्लाह तआला का सानिध्य पाने के लिए दुरूद भी ज़रूरी है और दुरूद भेजने वाला यक़ीनन फिर आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को सामने रखेगा। आप ने क्या इबादत के स्तर स्थापित किए, अपनी उम्मत को इस की नसीहत फ़रमाई। आप ने फ़रमाया कि मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ है।

(सुनन अन्निसाई किताब अशरतुलन्निसा हदीस 3391)

फिर मख़लूक़ के हक़ अदा करने के लिए भी आप ने अपने नमूने क़ायम फ़रमाए जिसकी मिसालें मिलनी मुश्किल हैं। अपनी फ़िक्र भी कभी नहीं की। जो कुछ था, घाटी के बराबर भी दौलत थी तो वह भी बांट दी। कोई मांगने वाला आया उस को ख़ाली हाथ भेजा।

(सही मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल बाब फ़ी सख़ा हदीस 2312))

इस के इलावा फिर और भी आप का हाथ हर समय मख़लूक़ की ख़िदमत के लिए तैयार रहता था। अत: दुरूद भेजने वाला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को सामने रखकर जब दुरूद भेजता है तो फिर ही उस की तवज्जा भी इस नमूने पर चलने की तरफ़ होती है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ायम फ़रमाए। जब यह हालत हो तो फिर अल्लाह तआला अपने प्यारे नबी, अपने प्यारे बंदे से हमारी मुहब्बत के इज़हार और इस पर दुरूद भेजने की वजह से हमारी दुआओं को भी क़बूलीयत का दर्जा देता है और तब ही हम अल्लाह तआला का क़ुरब प्राप्त करे के विनय और विनम्रता दिखाने वाले बन कर उन लोगों में शामिल होने वाले बन सकते हैं जो तक़्वा पर चलने वाले हैं और यही वे लोग हैं जो कामयाबी हासिल करने वाले हैं, सफलता पाने वाले हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फरमाते हैं कि

अगर हम में निरी बातें ही बातें हैं तो याद रखो कि कुछ फ़ायदा नहीं है। फ़रमाया कि फ़तह के लिए तक़्वा ज़रूरी है। फ़तह चाहते हो तो मुत्तक़ी बन जाओ और यही हक़ीक़ी तक़्वा है जो अल्लाह तआला की हक़ीक़ी पहचान करवाता है और इस के हुक्मों पर चलने वाला बनाता है

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 232)

फिर नमाज़ की हक़ीक़त बयान फ़रमाते हुए कि नमाज़ क्या चीज़ है और हक़ीक़ी नमाज़ कैसी होनी चाहिए आप फरमाते हैं कि

'' बहुत हैं कि ज़बान से तो ख़ुदा तआला का इक़रार करते हैं लेकिन अगर टटोल कर देखो तो मालूम होगा कि उनके अंदर नास्तिकता है क्योंकि दुनिया के कामों में जब व्यस्त होते हैं तो ख़ुदा तआला के क़हर और इस की अज़मत को बिलकुल भूल जाते हैं। इसलिए यह बात बहुत ज़रूरी है कि तुम लोग दुआ के माध्यम से अल्लाह तआला से मार्फ़त मांगो। बग़ैर उस के पूर्ण यक़ीन हरगिज़ हासिल नहीं हो सकता। वह उस वक़्त हासिल होगा जबकि यह इलम हो कि अल्लाह तआला से सम्बध विच्छेद करने में एक मौत है। गुनाह से बचने के लिए जहां दुआ करो वहां साथ ही कोशिश के सिलसिला को हाथ से ना छोड़ो।' दुआ भी ज़रूरी है ,तदबीर भी ज़रूरी है। ''और समस्त महफ़िलें और मज्लिसें जिनमें शामिल होने से गुनाह की तहरीक होती है उनको छोड़ दो।' ख़ुद हम जायज़ा ले सकते हैं हर कोई, कौन कौन सी ऐसी मज्लिसें हैं, कौन कौन सी ऐसी महफ़िलें हैं, कौन से ऐसे प्रोग्राम हैं टीवी के और दूसरी चीज़ों के जिनसे गुनाह की तहरीक होती है उनको छोड़ना पड़ेगा, छोड़ दो ''और साथ ही साथ दुआ भी करते रहो।' अल्लाह तआला के फ़ज़ल के साथ छोड़ने की तौफ़ीक़ मिलती है इसलिए उस की दुआ भी करो। ''और ख़ूब जान लो कि इन आफ़तों से जो क़ज़ा तथा क़दर की तरफ़ से इन्सान के साथ पैदा होती हैं जब तक ख़ुदा तआला की मदद साथ ना हो हरगिज़ रिहाई नहीं होती। नमाज़ जो कि पाँच वक़्त अदा की जाती है इस में भी यही इशारा है कि अगर वह नफ़सानी जज़बात और विचारों से उसे महफ़ूज़ ना रखेगा। तब तक वह सच्ची नमाज़ हरगिज़ ना होगी। नमाज़ के अर्थ टक्करें मार लेने और रस्म और आदत के तौर पर अदा करने के हरगिज़ नहीं। नमाज़ वह चीज़ है जिसे दिल भी महसूस करे कि रूह पिघल कर ख़ौफ़नाक हालत में अल्लाह तआला के दरवाज़ा पर गिर पड़े। जहां तक ताक़त है वहां तक रिक़्क़त के पैदा करने की कोशिश करे और गिड़िगड़ा कर दुआ मांगे कि शोख़ी और गुनाह जो अंदर नफ़स में हैं वह दूर हों। इसी किस्म की नमाज़ बरकत वाली होती है और अगर वह इस पर इस्तिक़ामत धारण करेगा तो देखेगा कि रात को या दिन को एक नूर उस के दिल पर गिरा है और नफ़स अम्मारा की शोख़ी कम हो गई है। जो बुराईयों की तरफ़ उभारने वाला नफ़स है वह धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। ''जैसे अज़दहा में एक क़त्ल करने वाला ज़हर होता है इसी तरह नफ़स अम्मारा में भी कत्ल करने वाले ज़हर होता है और जिसने उसे पैदा किया इसी के पास उस का ईलाज है।

(मल्फ़ूज़ात बाग 7 पृष्ठ 123)

अर्थात जो पैदा करने वाला है इसी के पास उस का ईलाज भी है अर्थात अल्लाह तआला ही इस का ईलाज कर सकता है इसलिए नफ़स की बुराईयों और गुनाहों से बचने के लिए अल्लाह तआला से ही उस का फ़ज़ल माँगना चाहिए। फिर नमाज़ का महत्त्व वर्णन करते हुए आप ने फ़रमाया कि नमाज़ ही इबादत का मग़ज़ (सार) है। इसलिए हमेशा याद रखना चाहिए कि नमाज़ के बग़ैर या अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़ा के बग़ैर इबादत का हक़ अदा ही नहीं हो सकता और नमाज़ के कुछ लवाज़मात भी हैं, कुछ शर्तें भी हैं, उनको पूरा करना भी ज़रूरी है। नमाज़ में इस बात का ख़्याल रखना भी ज़रूरी है कि अदब वाला हो कर अल्लाह तआला के सामने खड़ा हो। आजिज़ी हो, पूरा मग्न हो, उस के फ़ज़लों को मांग रहा हो। इस हालत की वज़ाहत फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

''एक बार मैंने ख़्याल किया कि सलात में और दुआ में क्या फ़र्क़ है। हदीस शरीफ़ में आया है कि اَلصَّلٰوۃُ ھِیَ الدُّعَاءُ ۔ اَلصَّلٰوۃُ مُخُّ الْعِبَادَۃ अर्थात नमाज़ ही दुआ है । नमाज़ इबादत का मग़ज़ है। जब इन्सान की दुआ केवल दुनिया के मामलों के लिए हो तो इस का नाम सलात नहीं।' इन्सान दुआ करता है, मस्जिदों में नमाज़ के लिए आता है, पाँच वक़्त नमाज़ें पढ़नी शुरू कर देता है, बड़ी दुआएं करता है, बड़ा रोता है सिर्फ इसलिए कि कुछ दुनया के मस्ले होते हैं। आप ने फ़रमाया कि सिर्फ दुनियावी बातों के लिए अगर नमाज़ पढ़ रहे हो तुम तो इस को सलात नहीं कहते ''लेकिन जब इन्सान ख़ुदा को मिलना चाहता है और इस की रज़ा को समक्ष रखता है और अदब, इन्किसार, विनय और निहायत मग्ल हो कर अल्लाह तआला के हुज़ूर में खड़ा हो कर उस की प्रसन्नता को चाहता है।' अपनी बातें नहीं मांगता रहता बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा का इच्छुक होता है। ''तब वह सलात में होता है। असल हक़ीक़त दुआ की वह है जिसके माध्यम से ख़ुदा और इन्सान के मध्य सम्पर्क बढ़े। यही दुआ है कि अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल करने का माध्यम होती है।' यही दुआ है जो कि अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल करने का माध्यम होती है ''और इन्सान को व्यर्थ बातों से हटाती है। असल बात यही है कि इन्सान अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करे उस के बाद रूह है कि इन्सान अपनी दुनया की ज़रूरतों के लिए भी दुआ करे।' पहले अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने की दुआ करो फिर दुनिया की ज़रूरतें जो हैं उनके लिए भी दुआ करे कि वह भी अल्लाह तआला के फ़ज़लों से ही मिलती हैं ''यह इस लिए जायज़ रखा गया है कि दुनिया की मुश्किलें कीई बार धार्मिक

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Purulia, West Bengal

मामलों में रोक हो जाती हैं ख़ासकर कच्चे और उधूरे ज़माना में ये बातें ठोकर का कारण बन जाती हैं।' जो कमज़ोरियाँ होती हैं, दुनिया के मामले ठोकर का कारण बन जाते हैं इसलिए अल्लाह तआला से पहले ताल्लुक़ क़ायम करो फिर दुनिया के मामलों के लिए भी दुआ करो। फ़रमाया कि ''सलात का लफ़्ज़ वेदना भरे अर्थ पर दलालत करता है जैसे आग से जलन पैदा होती है वैसी ही गदाज़श दुआ में पैदा होना चाहिए। जब ऐसी हालत को पहुंच जाए जैसे मौत की हालत होती है तब उस का नाम सलात होता है।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 367-368)

अत: यह है नमाज़ की वास्तविक हालत जिसे हासिल करने की हमें कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाए

फिर एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने इस बात की वज़ाहत फ़रमाई कि याद रखो अगर ईमान का दावा है तो फिर नमाज़ों की अदायगी भी ज़रूरी है। तीन नमाज़ें पढ़ कर या चार नमाज़ें पढ़ कर जिस तरह कुछ लोग करते हैं फिर ईमान का दावा ग़लत बात है क्योंकि ईमान की जड़ नमाज़ है और जिसकी जड़ ही नहीं है वह एक खोखले दरख़्त की तरह है जिसको थोड़ी सी हवा जो है ज़मीन पर गिरा देगी। आप फ़रमाते हैं:

''जिस तरह बहुत धूप के साथ आसमान पर बादल जमा हो जाते हैं और बारिश का वक़्त आ जाता है ऐसा ही इन्सान की दुआएं एक ईमान की गर्मी पैदा करती हैं और फिर काम बन जाता है। नमाज़ वह है जिसमें सोज़िश और गदाज़श के साथ और आदाब के साथ इन्सान ख़ुदा तआला के समक्ष खड़ा होता है। जब इन्सान बंदा हो कर लापरवाही करता है तो ख़ुदा की ज़ात भी ग़नी है।' इस को भी कोई परवाह नहीं होती फिर। ''हर एक उम्मत उस वक़्त तक क़ायम रहती है जब तक उस में अल्लाह तआला की तरफ ध्यान क़ायम रहता है। ईमान की जड़ भी नमाज़ है। कुछ बेवक़ूफ़ कहते हैं कि ख़ुदा को हमारी नमाज़ों की क्या ज़रूरत है।' फ़रमाया कि ''हे नादानो ख़ुदा को ज़रूरत नहीं।' उस को ज़रूरत नहीं है ''मगर तुमको तो ज़रूरत है।' तुम्हें ज़रूरत है नमाज़ों की ''कि ख़ुदा तआला तुम्हारी तरफ़ ध्यान करे। ख़ुदा की तवज्जा से बिगड़े हुए काम सब दरुस्त हो जाते हैं। नमाज़ हज़ारों भूलूं को दूर कर देती है और अल्लाह ताला के कुर्ब का माध्यम है।

(मलफ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 378)

और फिर सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने तक ही नहीं कि इस से अल्लाह तआला का क़ुर्ब मिलता है, भूल माफ़ हो जाती हैं और बिगड़े काम दरुस्त हो जाते हैं बल्कि नेक नीयती से मस्जिद में आने वाले और बैठ कर नमाज़ का इंतिज़ार करने वाले के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक नमाज़ के लिए अर्थात उस के इंतिज़ार में, नमाज़ पढ़ने के इंतिज़ार में कोई शख़्स मस्जिद में बैठा रहता है नमाज़ में मसरूफ़ ही समझा जाता है। मस्जिद में बैठना भी और वहां ज़िक्र इलाही कर रहा है तो वह नमाज़ में मसरूफ़ समझा जाएगा और फ़रिश्ते इस पर दुरूद भेजते रहते हैं और कहते हैं कि अल्लाह! इस पर रहम कर और इस को बख़श दे। इस की तौबा क़बूल कर

(सही मुस्लिम किताबुल मसाजिद बाब फ़ज़ल अस्ससलातिल मकतूब फ़ी जमाअत... हदीस 649))

अत: कितना बड़ा अज्र है मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ने वाले का कि सिर्फ नमाज़ पढ़ने का ही नहीं बल्कि इंतिज़ार का भी सवाब मिल रहा है अल्लाह तआला की तरफ़ से और फ़रिश्ते उस के लिए दुआएं कर रहे हैं

अत: ऐसे मेहरबान ख़ुदा की इबादत का हक़ अदा करने की हमें किस फ़िक्र के साथ कोशिश करनी चाहिए और पांचों वक़्त आकर मस्जिद को आबाद रखने की कोशिश करनी चाहिए। इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि मज़हब की इच्छा एक एकता पैदा करना है, एक क़ौम और एक उम्मत बनाना है आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की यह इच्छा है कि समस्त इन्सानों को एक नफ़्स वाहिदा की तरह बना दे जिसका नाम वहदत जमहूरी है जिससे बहुत से इन्सान बहालत मजमूई एक इन्सान के आदेश में समझा जाता है, बहुत सारे जमा हो जाते हैं तो एक इन्सान बन जाता है। मज़हब से भी यही इच्छा होती है कि तस्बीह के दानों की तरह वहदत जमहूरी के एक धागे में सब पिरोए जाएं। ये नमाज़ें जमाअत के साथ जो कि अदा की जाती हैं वे भी इसी वहदत के लिए हैं ताकि सारे नमाज़ियों का एक वजूद शुमार किया जाए और आपस में मिलकर खड़े होने का हुक्म इसलिए है कि जिसके पास ज़्यादा नूर है वे दूसरे कमज़ोर में सरायत कर के उसे क़ुव्वत दे। यहां तक कि हज भी इसलिए है। इस वहदत जमहूरी को पैदा करने और क़ायम रखने की इबतिदा इस तरह से अल्लाह तआला ने की है कि पहले यह आदेश दिया कि हर एक मुहल्ले वाले पाँच वक़्त नमाज़ों को जमाअत के साथ मुहल्ला की मस्जिद में अदा करें ता कि अख़लाक़ का तबादला आपस में हो और अनवार मिलकर कमज़ोरी को दूर कर दें और आपस में परिचय हो कर मुहब्बत पैदा हो। तआरुफ़ बहुत उम्दा चीज़ है क्योंकि इस से मुहब्बत बढ़ती है जो कि वहदत की बुनियाद है यहां तक कि परिचय वाला दुश्मन एक नाआशना दोस्त से बहुत अच्छा होता है क्योंकि जब ग़ैर मुल्क में मुलाक़ात हो तो परिचय की वजह से दिलों में मुहब्बत पैदा हो जाती है। वजह उस की यह होती है कि द्वेश वाली ज़मीन से अलग होने के बुग़ज़ के कारण जो कि आरिज़ी चीज़ होते है वे तो दूर हो जाता है और सिर्फ परिचय बाक़ी रह जाता है। फिर दूसरा हुक्म यह है कि जुम्अ: के दिन जामा मस्जिद में जमा हों क्योंकि एक शहर के लोगों का हर रोज़ जमा होना मुश्किल होता है इसलिए यह तजवीज़ है कि शहर के सब लोग हफ़्ते में एक बार मिलकर परिचय और एकता करें।

अब यहां दूरी अगर ज़्यादा भी हों तो सवारियों की सहूलत है जिनके पास उनका तो मस्जिद में रोज़ाना आना भी कोई ऐसा मुश्किल नहीं है ,वे आ सकते हैं। फिर अगर नीयत हो आने की तो आया जा सकता है मस्जिद को आबाद करने के लिए लेकिन फ़रमाया अगर बहुत दूर भी रह रहे हैं लोग और मजबूरी भी है तब भी जुम्अ: को तो ज़रूर आना चाहिए। आख़िर कभी ना कभी तो सब एक हो जावेंगे। फिर साल के बाद दोनों ईदों में भी तजवीज़ की कि गांव और शहर के लोग मिलकर नमाज़ अदा करें ताकि तआरुफ़ और मुहब्बत बढ़कर वहदत जमहूरी पैदा हो। फिर इसी तरह सारी दुनिया के इजतिमा के लिए एक दिन उम्र-भर में निर्धारित कर दिया कि मक्का के मैदान में सब जमा हूँ अर्थात जिनको तौफ़ीक़ है हज करने की वे हज को जाएं। अत: कि इस तरह से अल्लाह तआला ने चाहा कि आपस में मुहब्बत और प्रेम तरक़्क़ी पकड़े और फिर आप अपने मुख़ालिफ़ों के बारे में बता रहे हैं, अफ़सोस कि उनको इस बात का इलम नहीं कि इस्लाम का फ़लसफ़ा कैसा पक्का है, जो इस्लाम के विरोधी हैं उनको पता ही नहीं जो इबादतों पर एतराज़ करते रहते हैं, पाँच वक़्त की इबादतें उनका मक़सद किया है, हर हफ़्ते की इबादत का क्या मक़सद है, ईदों की, बाक़ी बातों की तो आप फ़र्मा रहे हैं यह फ़लसफ़ा है और इस को याद रखना चाहिए। फ़रमाया कि ख़ुदा तआला के आदेशों में ढीलापन और इस से पूर्ण रूप से मुंह मोड़ना कभी मुम्किन ही नहीं। फ़रमाते हैं कि अफ़सोस ज्ञान नहीं कि इस्लाम का फ़लसफ़ा कैसा पक्का है। दुनया के हुक्काम की तरफ़ से जो आदेश पेश होते हैं उनमें तो इन्सान हमेशा के लिए ढीला हो सकता है लेकिन ख़ुदा तआला के आदेशों में ढीलापन और इस से पूर्ण रूप से मुंह मोड़ना कभी मुम्किन ही नहीं। कौन सा ऐसा मुस्लमान है जो कम से कम ईदों की भी नमाज़ ना अदा करता हो। अत: इन समस्त इज्तिमाओं का यह फ़ायदा है कि एक के अनवार दूसरे में असर कर के उसे शक्तियां बख़्शें।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 129-130)

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

आपस में मिलते-जुलते हैं तो बहरहाल असर होता है लेकिन ये तो उन लोगों के लिए जो बिलकुल ही ईमान में कमज़ोर हैं लेकिन हक़ीक़ी ईमान यही है कि पाँच वक़्त नमाज़ों के लिए मस्जिद में आओ। जबकि अल्लाह तआला ने आपको यह मस्जिद प्रदान कर दी है तो आप लोगों को जमा हो कर इस वहदत का नज़ारा भी यहां पेश करना चाहिए, जिनको सफ़र की भी सहूलतें हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से फ़ायदा उठाते हुए उसे आबाद रखें फिर अल्लाह तआला भी किस तरह मेहरबानी फ़रमाता है जैसा कि अभी बताया कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को इस के लिए दुआओं पर लगा दिया जो पाँच वक़्त नमाज़ों के लिए आते हैं और फिर जो नमाज़ जमाअत जमाअत के साथ है इस का सवाब भी अल्लाह तआला ने सत्ताईस गुना अधिक रका है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अज़ान बाब फ़ज़ल सलातुल जमाअत हदीस 645)

अत: अल्लाह तआला के फ़ज़लों के इस इज़हार के बावजूद अगर हम बावजूद तौफ़ीक़ होते हुए उस की क़दर नहीं करते तो यह बदक़िस्मती है। हर अहमदी के लिए यह बहुत सोचने का स्थान है और एक कोशिश से मस्जिद को आबाद करने की ज़रूरत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं कि

''हे वे समस्त लोगो जो अपने आप को मेरी जमाअत में शामिल करते हो ,आसमान पर तुम उस वक़्त मेरी जमाअत गिने जाओगे जब सचमुच तक़्वा की राहों पर क़दम मारोगे। अत: अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे ख़ौफ़ और हुज़ूर से अदा करो कि मानो तुम ख़ुदा तआला को देखते हो।' पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे ख़ौफ़ और हुज़ूर से अदा करो कि मानो तुम ख़ुदा तआला को देखते हो ''और अपने रोज़ों को ख़ुदा के लिए सिदक़ के साथ पूरे करो। हर एक जो ज़कात के योग्य है वे ज़कात दे और जिस पर हज फ़र्ज़ हो चुका है और कोई कोर नहीं वे हज करे। नेकी को सँवार कर अदा करो और बुराई को बेज़ार हो कर तर्क करो। यक़ीनन याद रखो कि कोई कर्म ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता जो तक़्वा से ख़ाली है। हर एक नेकी की जड़ तक़्वा है। जिस कर्म में यह जड़ नष्ट नहीं होगी वे कर्म भी नष्ट नहीं होगा।''फ़रमाया ''....जब कभी तुम अपना नुक़्सान करोगे तो अपने हाथों से, ना दुश्मन के हाथों से। अगर तुम्हारी ज़मीनी इज़्ज़त सारी जाती रहे तो ख़ुदा तुम्हें एक अनश्वर इज़्ज़त आसमान पर देगा अत: तुम उस को मत छोड़ो ।''फ़रमाया ''...तुम ख़ुदा की आख़िरी जमाअत हो अत: वे कर्म नेक दिखलाओ जो अपने कमाल में इंतिहाई स्तर पर हो। हर एक जो तुम में सुस्त हो जाएगा वह एक गंदी चीज़ की तरह जमाअत से बाहर फेंक दिया जाएगा और हसरत से मरेगा और ख़ुदा का कुछ ना बिगाड़ सकेगा। देखो मैं बहुत ख़ुशी से ख़बर देता हूँ कि तुम्हारा ख़ुदा वास्तव में मौजूद है। यद्यिप सब उसी की मख़लूक़ है लेकिन वह उस शख़्स को चुन लेता है जो उस को चुनता है। वह उस के पास आ जाता है जो उस के पास जाता है। जो इस को इज़्ज़त देता है वह भी इस को इज़्ज़त है।''अर्थात इन्सान को

(किश्ती नूह, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 19 पृष्ठ 15)

अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इन दर्द भरे शब्दों को समझते हुए ईमान में बढ़ने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए, इबादतों का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रादन फ़रमाए, ख़ुदा तआला से ज़िन्दा सम्बन्ध पैदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और हम इस मस्जिद को भी हमेशा आबाद रखने वाले हों

अब मैं मस्जिद के बारे में कुछ विवरण भी पेश कर देता हूँ। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से कुछ साल पहले इस मस्जिद के लिए कोशिश की गई। अल्लाह तआला ने फिर जगह प्रदान भी फ़र्मा दी जो कि यह सारा क्षेत्रफल 2640 वर्ग मीटर पर आधारित है और इस में पहले भी पंद्रह कमरों पर आधारित एक तीन मंज़िला इमारत मौजूद थी। एक बड़ा हाल था और ख़रीदारी के लिए कुछ हिस्सा मर्कज़ से कर्ज़ हसना के तौर पर उस वक़्त लिया गया था और अमीर साहिब कहते हैं कि इस में से सिवाए पच्चास हज़ार यूरो के लगभग सारा अदा हो चुका है। फिर कौंसल के कुछ आरोप थे उनको विभिन्न मीटिंग में दूर किए। मेयर के साथ विभिन्न मीटिंगज़ कर के नक़शे जमा कराए और अल्लाह के फ़ज़ल से ये नक़्शे भी पास हुए। जो उनका नक़्शा था, प्लान (plan)था उस को बनाने के सिलसिले में उनकी रिपोर्ट के अनुसार आर्केटेकट ने एक मिलियन यूरो का अंदाज़ा दिया था और इस को भी मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया फ़्रांस ने पूरा करने का वादा किया और अपनी ज़िम्मेदारी क़बूल की लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह मस्जिद पाँच लाख तीस हज़ार यूरो में मुकम्मल हो गई। अब तक ख़ुद्दामुल अहमिदया की तरफ़ से साढ़े तीन लाख यूरो मिले हैं, बाक़ी जमाअत ने अदा किए हैं और ख़ुद्दामुल अहमिदया कहती है कि हम बाक़ी भी अदा कर देंगे लेकिन ख़ुद्दामुल अहमिदया ने तो अदा कर दिए और पूरा कर भी देंगे शायद, इंशा अल्लाह तआला, शायद क्या इंशा अल्लाह तआला कर देंगे लेकिन बाक़ी जमाअत क्यों इस से महरूम रह रही है। अगर यह मस्जिद अब बन गई है तो लजना और अन्सार को चाहिए कि एक मस्जिद की तैय्यार की ज़िम्मेदारी वे लें दोनों मिल के लें और अगले तीन सालों के अंदर एक और मस्जिद यहां बनानी चाहिए जो अन्सार और लजना को मिलकर बनानी चाहिए। इस मस्जिद की तैय्यार के लिए एक कमेटी बनाई गई थी जिसमें आदरणीय असलम दोबोरी (Doobory) साहिब, शहबाज़ साहिब, और मुहम्मद आसिम साहिब, मन्सूर साहिब ने उनकी रिपोर्ट के अनुसार बड़ी मेहनत की है। अल्लाह तआला उनको बदला दे।

और इस मस्जिद में क़ानूनी तौर पर 250 लोगों के नमाज़ पढ़ने की जगह है जो कौंसल ने अपनी गिनती (calculation)की इस के अनुसार और पचास गाड़ीयों की पार्किंग के लिए भी जगह है। एक जमाअत का दफ़्तर है, लजना का दफ़्तर भी है, मर्द और औरतों के लिए लाइब्रेरी भी है और इस तरह ग़ुस्लख़ाने इत्यादि भी काफ़ी हैं। बड़ा कवर्ड (covered)पार्किंग हाल है और अगर कभी एमरजैंसी ज़रूरत हो तो इस में भी 125 लोग आ सकते हैं। इस से पहले वाली इमारत जो थी इस में पंद्रह कमरे हैं। इस को दोबारा मुरम्मत कर के तैयार किया गया है और ये भी अब इस्तिमाल के योग्य है

यह मस्जिद अब स्टरास बर्ग शहर से लगभग पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर है और यह कोई ऐसी दूरी नहीं है कि जो दूर हो, नमाज़ी ना आ सकें। बड़े आराम से आ सकते हैं। मस्जिद और हालों का एरिया (covered area)तीन सौ तीन क्षेत्रफल वर्ग मीटर है और इस में मुरब्बी हाऊस भी है, चार कमरों का गेस्ट हाऊस भी है। बाक़ायदा मीनार की इजाज़त तो नहीं मिली लेकिन मस्जिद के दाएं हिस्से में आठ मीटर की बुलंदी पर डोम (Dome) रखने की इजाज़त मिल गई है और वह अच्छा ख़ूबसूरत लगता है वह मस्जिद का ही हिस्सा है। अन्दर मेहराब भी है सब कुछ है। अन्दर की तरफ़ भी यह गोलाई में लिखा गया है। अल्लाह तआला हर लिहाज़ से मुबारक फ़रमाए और उन ख़ुद्दाम के अम्वाल तथा जानों में बरकत डाले जिन्होंने इस मस्जिद की तैय्यार में क़ुर्बानी दी है और फिर सिर्फ़ मस्जिद की माली क़ुर्बानी ही नहीं इस मस्जिद की आबादी की रूह को समझने की भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और ख़ुद्दाम की इबादत के स्तर भी बुलंद हों और जमाअत के लोगों के स्तर भी बुलंद होते चले जाएं।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल01 नवम्बर2019 ई पृष्ठ 5 से 8)

☆ ☆ ☆

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 2 का शेष

कान्फ्रैंस रुम भी मौजूद है।

एक रीजनल लाइब्रेरी भी स्थापित की गई है। इस हिस्सा में एक जमाअत का किचन भी बनाया गया है। छोटे बच्चों के लिए एक नर्सरी भी है।

मस्जिद की इमारत से हट कर कुछ दूरी पर लंगर ख़ाना भी तय्यार किया गया है। इस के अतिरिक्त एक बास्कट बाल कोर्ट इसी तरह क्रिकेट के लिए एक हार्ड बाल की पिच भी तय्यार की गई है। इसी तरह यहां 226 गाड़ियों की पार्किंग भी मौजूद है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद का निरीक्षण फ़रमाया और हिदायत फ़रमाई कि महिराब की शक्ल अंदर होनी चाहिए इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने आवाज़, साऊँड सिस्टम के बारे में पूछा कि आवाज़ की गूंज इत्यादि तो नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने लजना हाल का भी निरीक्षण फ़रमाया। इसी तरह विभिन्न दफ़्तर भी देखे और मर्कज़ी किचन में भी तशरीफ़ ले गए और इंतिज़ामीया से मेहमानों के लिए खाने के प्रबन्ध के बारे में पूछा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

दो बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई और उसके साथ मस्जिद मसरूर का उद्घाटन हुआ।

मस्जिद के बाहरी सेहन में औरतों के लिए दो बड़ी मार्कीज़ लगाई गई थीं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला इन दोनों मार्कीज़ में तशरीफ़ ले गए जहां औरतें दर्शन से फ़ैज़याब हुईं।

इसके बाद मस्जिद के बाहरी सेहन में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पौधा लगाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के लजना हाल में तशरीफ़ लाए जहां मज्लिस आमला जमाअत साऊथ वर्जीनिया के मेम्बरों, मजलिस आमला अन्सारुल्लाह और मजलिस आमला ख़ुद्दामुल अहमिदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ ग्रुप फ़ोटोज़ बनवाने का सौभाग्य पाया।

प्रैस कान्फ्रैंस

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कान्फ्रैंस रुम में तशरीफ़ ले आए जहां प्रैस कान्फ्रैंस का आयोजन हुआ। जिसमें इलैक्ट्रॉनिक, प्रिंट और सोशल मीडिया के निम्नलिखित पत्रकार और प्रतिनिधि शामिल थे।

WTOP वाशिंगटन DC की एक बहुत प्रमुख न्यूज़ सर्विस है, इस के पत्रकार शामिल हुए।

VOA (वाइस आफ़ अमरीका) वाइस आफ़ अमरीका का आरम्भ 1942 ई में हुआ। यह ग़ैर फ़ौजी और अमरीका के बाहर ब्रॉडकास्टिंग के लिए अमरीकी फैडरल हुकूमत की एक आफीशल संस्था है। यह संस्था यू ऐस ए के बारे में अमरीका से बाहर जनसहमित स्थापित करने में अहम भूमिका अदा करती है।

वाइस आफ़ अमरीका के तीन पत्रकार आज की प्रैस कान्फ्रैंस में शामिल हुए।

Potomac Local इसका आरम्भ 2010 ई में किया गया।Potomac Local प्रिंस विलियम और Stafford काओनटीज़ और Manassas और Manassas Park के शहरों की एक अहम आज़ाद और स्थानीय न्यूज़ एजैंसी है। इस के भी पत्रकार शामिल हुए।

Whats Up Prince William प्रिंस विलियम काओनटी की लोकल न्यूज़ आउट लेट है। इस के भी पत्रकार शामिल हुए।

NRB TV के पत्रकार भी शामिल हुए।

Freelance Journalist भी प्रैस कान्फ्रैंस में शामिल हुए।

प्रैस कान्फ्रैंस का आरम्भ चार बजकर तेंतीस मिनट पर हुआ।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर पिछली बार पाँच साल पहले अमरीका तशरीफ़ लाए थे। अब हुज़ूर अनवर ने लगभग तीन हफ़्ते यहां निवास किया है? क्या हुज़ूर अनवर ने कोई तब्दीली देखी है? और आपके इस वर्तमान दौरे के बारे में क्या विचार हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जहां तक हमारी जमाअत में तबदीली का सम्बन्ध है तो हमारी जमाअत में यहां काफ़ी इज़ाफ़ा हुआहै। पिछले पाँच सालों के दौरान अहमदी मुहाजिरीन की एक बड़ी संख्या यहां स्थनांतरित हुई है। इस के अतिरिक्त हमारी जमाअत ने यहां कुछ मस्जिद की भी बुनियाद रखी हैं जो विभिन्न शहरों और स्टेटस में एक नई वृद्धि है। तो हमारी जमाअत तरक़्क़ी कर रही है।

जहां तक देश के बाक़ी हालात का सम्बन्ध है तो मेरा ख़्याल है इस बारे में से आप मुझसे ज़्यादा बेहतर जानते हैं। इन हालात में तबदीली तो काफ़ी स्पष्ट है। जब भी हुकूमतें बदलती हैं तो तबदीलियां आती ही हैं। कुछ सयासी तबदीलियां भी होती हैं। बाक़ी जहां तक हमारी जमाअत का सम्बन्ध है तो हमारी जमाअत अमरीका में जहां-जहां भी स्थापित है वहां सियासतदानों के साथ अच्छे सम्पर्क हैं और उन सम्बन्धों में और अधिक से और अधिक इज़ाफ़ा हो रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आजकल आपके सियास्तदान इलैक्शन में व्यस्त हैं। देखते हैं कि इस के क्या नतीजे निकलते हैं।

इस पर पत्रकार ने पूछा कि क्या आप इलैक्शन को follow कर रहे हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बहुत ज़्यादा तो नहीं लेकिन बहरहाल कुछ ना कुछ मालूमात होती हैं। आज शायद आपके प्रैज़ीडैंट ने अपनी campaign के बारे में फाईनल तक़रीर की है।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि अमरीका के अतिरिक्त बाक़ी दुनिया में अहमदियों पर अत्याचार होते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बिलकुल अत्याचार होते हैं विशेष रूप से पाकिस्तान में पर्सी कीवशन बहुत ज़्यादा हो रही है। पाकिस्तान से अहमदियों की एक बड़ी संख्या बाहर के देशों में स्थनांतरित हो रही है। इस की बड़ी वजह पर्सी कीवशन ही है। पाकिस्तान में अहमदियों के ख़िलाफ़ नियमित क़नून मौजूद हैं जिनके अनुसार हम अपने अक़ीदों का ना प्रकट कर सकते हैं, ना उन पर अनुकरण कर सकते हैं और ना ही उनकी तब्लीग़ कर सकते हैं। पाकिस्तान के अतिरिक्त और भी कुछ मुसलमान देश हैं जहां अहमदियों को समस्यायों का सामना है। लेकिन खासतौर पर पाकिस्तान में अहमदियों की ज़िन्दगी काफ़ी मुश्किल है।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि आप तरक़्क़ी करने वाले देशों में सामाजिक कामों को बढ़ावा दे रहे हैं। आपकी अपनी जमाअत इन देशों की किस तरह मदद कर रही है?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ने फ़रमाया: अफ्रीक़ा विशेष रूप से वैस्ट अफ्रीक़ा के काफ़ी देशों हैं जहां हमारे हस्पताल काम कर रहे हैं और हम इन देशों में मेडीकल सहूलतें मुहय्या कर रहे हैं। इन देशों में हमारे स्कूल भी स्थापित हैं और हम इन बच्चों को भी शिक्षा दे रहे हैं जिनकी स्कूल तक पहुंच नहीं होती। हमारे स्कूल अक्सर दूरदराज़ के इलाक़ों में हैं। इस के अतिरिक्त और भी कई प्राजेक्टस चल रहे हैं जैसे पीने के साफ़ पानी का प्राजैक्ट है। अफ्रीक़ा में साफ़ पीने का पानी बहुत मुश्किल से मिलता है। छोटे छोटे बच्चे अपने सिरों पर बालटियां रखकर दो दो, तीन तीन किलोमीटर पैदल चल कर जाते हैं और तालाबों से पानी लेकर आते हैं और जो पानी उपलब्ध होता है वह भी गंदा और मैला होता। जब उन लोगों के घरों के बाहर पीने का साफ़ पानी मिलता है तो वे बहुत ख़ुशी का प्रकट करते हैं। यहां अगर आपको महंगी से महंगी चीज़ मिले तो आप उस के मिलने पर बहुत ख़ुश होंगी और ख़ुशी से उछलने लगेंगी। जब अफ्रीक़ा के वे लोग जो इन बुनियादी सुविधों से भी महरूम हैं उन्हें जब पीने का साफ़ पानी भी मिलता है तो उनके चेहरों पर ख़ुशी देखने वाली होती है। इस वक़्त उनकी भावनाएं वर्णन नहीं की जा सकतीं।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि अहमदियों और दूसरे मुसलमान फ़िर्क़ों में क्या फ़र्क़ है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: रसूल करीम की पेशगोई के अनुसार सारे मुसलमान इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि आख़री दौर में एक शख़्स ज़ाहिर होगा या उनकी तफ़सीर के अनुसार दो शख़्स ज़ाहिर होंगे जिन में से एक मसीह और एक महदी होगा। हमारा यक़ीन है कि अहमदिया मुस्लिमा जमाअत के संस्थापक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम वही शख़्स थे। और आप अलैहिस्सलाम ने दावा किया कि अल्लाह तआला ने आप पर वह्य की कि आप अलैहिस्सलाम वही शख़्स हैं जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि इस आने वाले शख़्स का मक़ाम नबी जैसा होगा। तो बाकी मुसलमान फ़िरक़े कहते हैं कि वह आदमी अभी ज़ाहिर नहीं हुआ और मसीह आसमान से नाज़िल होगा और महदी का ज़हूर मुसलमानों के बीच में से होगा। और फिर यह दोनों इकट्ठे मिलकर इस्लाम

फैलाने का काम करेंगे।

दूसरे मुसलमान फ़िरक़े कहते हैं कि अहमदी अपनी जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम को नबी समझते हैं। हमारा जवाब यह होता है कि हम नबी समझते हैं क्योंकि इस्लाम के पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस आने वाले शख़्स को नबी का लक़ब(नाम) प्रदान फ़रमाया है। अत: वे कहते हैं कि अगर हम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम को नबी समझते हैं तो फिर हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत की मुहर को तोड़ रहे हैं जो कि ख़ातमुन्निबय्यीन हैं। वे कहते हैं कि अहमदी कुराआन की शिक्षाओं को नहीं मानते और हज़रत मुहम्मद की ख़ातमियत पर हमला कर रहे हैं क्योंकि वे अपनी जमाअत के बानी की नबुव्वत पर ईमान रखते हैं। इस तरह उनकी समझ बूझ के अनुसार अहमदी मुर्तद हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करने वाले होते हैं , इसलिए यह हर किस्म की सज़ा के अधिकारी हैं। जबकि क़ुरआन करीम में तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करने वाले के लिए या इर्तिदाद धारण करने वाले के लिए कोई सज़ा नहीं मुक़र्रर की गई। अत: इसी वजह से पाकिस्तान में अहमदियों पर अत्याचार किए जा रहे हैं और बाक़ी मुसलमान देशों में भी अहमदियों को पसंद नहीं किया जाता। बाक़ी जहां तक हमारे अक़ीदों का सम्बन्ध है तो हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आख़री शरई नबी थे। हम ईमान रखते हैं कि क़ुरआन आख़री शरई किताब है। लेकिन हमारा यह भी ईमान है कि वह शख़्स जिसने आख़री दिनों में आना था उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबी का ख़िताब दिया है लेकिन वह नबी शरीयत वाला नबी नहीं बल्कि ज़िल्ली (प्रतिरूप) नबी होगा। हम यक़ीन रखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ज़िल्ली नबी आ सकता है लेकिन कोई नई शरीयत नहीं आ सकती। हमारे और अन्य मुसलमान फ़िर्क़ों के मध्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्निबय्यीन होने की तफ़सीर में फ़र्क़ है। हम कहते हैं कि रसूल करीम आख़री शरई नबी हैं लेकिन उनके बाद बरूज़ी नबी आ सकते हैं लेकिन अन्य मुसलमान कहते हैं कि रसूल करीम चूँकि ख़ातमुन्निबय्यीन हैं इसलिए उनके बाद कोई नबी नहीं आसकता चाहे वह ज़ली हो या शरीयत वाला नबी हो।

*इसके बाद वाइस आफ़ अमरीका (बंगला सर्विस) के पत्रकार ने सवाल किया कि आजकल सारी दुनिया में ही मुसलमानों पर ज़ुलम हो रहे हैं। फ़लस्तीन में ज़ुलम हो रहा है। अफ़्रीक़ा में मुसलमानों पर ज़ुलम हो रहा है। हाल ही में मियांमार में मुसलमानों पर बहुत ज़ुलम हुआ है और लाखों की संख्या में मुसलमानों को मियांमार से हिजरत करना पड़ी है और वे बंगला देश में आकर पनाह ले रहे हैं जहां वे कैम्पों में बहुत बदतरीन हालात में रह रहे हैं। इसका क्या हल है? जमाअत अहमदिया इस बारे में से क्या सोच रही है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सिर्फ मुसलमानों पर ही ज़ुलम नहीं हो रहे , ग़ैर तरक़्क़ी याफ्ताह देशों विशेष रूप से अफ़्रीक़ा के लोग बहुत ज़्यादा मुश्किल हालात का सामना कर रहे हैं। बाक़ी जहां तक Rohingya मुसलमानों का सम्बन्ध है तो उन पर वास्तव में हुकूमत की तरफ़ से या उन लोगों की तरफ़ से जिन्हें हुकूमत का संरक्षण प्राप्त है बहुत ज़्यादा अत्याचार किए जा रहे हैं। हम इन अत्याचारों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं और उनकी सख़्त मुज़म्मत करते हैं।अपनी चैरिटी आर्गेनाईज़ेशन के द्वारा हम उन लोगों की बंग्लादेश कैम्पों में जिस हद तक मुम्किन हो सके सहायता भी कर रहे हैं। हम तो उन सारी लोगों, हुकूमतों और देशों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं जो किसी भी सूरत में अत्याचार कर रहे हैं।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि एक पूर्ण इस्लामी समाज किस तरह का होता है और एक इस्लामी फ़ैमिली किस तरह की होती है? इस्लामी समाज या इस्लामी फ़ैमिली आजकल के समस्याओं को किस तरह हल कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इतिहास में इस्लामी समाज और इस्लामी हुकूमत की नज़ीर हमारे सामने है और यह इस्लामी हुकूमत उस वक़्त स्थापित हुई जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ़ हिजरत फ़रमाई। इस वक़्त मदीना में मौजूद मुसलमानों, यहूदियों और ईसाईयों के मध्य एक सन्धि तय पाई थी और सारे अपनी अपनी शरीयतों के अनुसार वहां ज़िन्दगियां गुज़ारते थे और सारों ने एक साथ सहमित कर के रसूल करीम को इस रियासत के सरबराह के तौर पर चुना था। तो इस्लामी हुकूमत का उदाहरण मीसाक़ मदीना का है। इस वक़्त सारे लोग बड़े अच्छे माहौल में एक दूसरे के साथ रहते रहे सिवाए उन के जिन्होंने इस मुआहिदा का सम्मान नहीं किया और क़ानून की ख़िलाफ़ काम किया। तो इस्लामी समाज का वह एक मॉडल था। यही वह मॉडल है जिसके बारे में इमरान ख़ान कहता है कि वह पाकिस्तान में स्थापित करना चाहता है जिस में वह अभी तक कामयाब नहीं हो सका।

जहां तक ख़ानदानों और घरों का सम्बन्ध है तो उस के बारे में इस्लाम कहता है कि आपको अपनी औरतों को इज़्ज़त देनी चाहिए, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत की इज़्ज़त करो, आपने फ़रमाया कि जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है। इस का अर्थ है कि बच्चों की परवरिश और तरबियत में औरतों का बहुत अहम भूमिका है। फिर इस्लाम ने तलाक़ की इजाज़त तो दी कि अगर मियां बीवी के मध्य सहमति नहीं होती तो तलाक़ की इजाज़त है लेकिन इस के बावजूद तलाक़ को नापसंदीदा कर्म क़रार दिया गया है। अल्लाह तआला ने तलाक़ को पसंद नहीं फ़रमाया। अत: ख़ानदान के सम्बन्ध में यह इस्लामी शिक्षाएं हैं। इसी तरह दूसरे मामलों के बारे में भी पूर्ण रहनुमाई फ़रमाई। जैसे तिजारत है। इसके बारे में इस्लाम कहता है कि ईमानदारी के साथ तिजारत करें। एक बार रसूल करीम बाज़ार तशरीफ़ ले गए और वहां गेहूँ के ढेर में हाथ डाला तो पता चला कि ढेर के नीचे दानों का गुणवत्ता और थी और ऊपर वाले दानों की और थी। इस पर आपने फ़रमाया कि तुम तो लोगों को धोखा दे रहे हो जिसकी हरगिज़ इजाज़त नहीं है। उसकी तुम्हें सज़ा मिलेगी। तो इस्लाम ने हर लिहाज़ से लोगों की रहनुमाई की है। इसलिए अगर इस्लामी शिक्षाओं पर वास्तविक तौर पर अनुकरण किया जाए तो सारी लोग बहुत अधिक अमन के साथ ज़िन्दगियां गुज़ार सकते हैं।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर दुनिया में अमन के स्थापना के लिए कोशिशें कर रहे हैं। इस वक़्त दुनिया के हालात काफ़ी ख़राब हैं। सीरिया में जंग हो रही है और इसी तरह दुनिया को और भी कई समस्यायों का सामना है। अत: इन हालात के बारे में से हुज़ूर अनवर का क्या दृष्टिकोण है और हम किस तरह अमन की स्थापना कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर लोगों और दुनिया के रहनुमाओं ने अपने सृष्टा और इस की सृष्टि के हुक़ूक़ की अदायगी की ज़िम्मेदारी को ना समझा तो दुनिया में एक बहुत बड़ी तबाही आएगी जिस पर क़ाबू पाना किसी के लिए भी मुम्किन ना होगा। आजकल हर कोई दूसरे की कमज़ोरियों की निशानदेही करता है कि अमुक का क़सूर है या अमुक की ग़लती है लेकिन अपने गिरेबान में कोई नहीं झाँकता। इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार अपने हुक़ूक़ का मुतालिबा करने की बजाय हमें दूसरों के हुक़ूक़ की अदायगी करनी चाहिए। यही वाहिद हल है। लेकिन मौजूदा हालात में इस उसूल पर अनुकरण करना निहायत मुश्किल हो चुका है। इन शिक्षाओं पर मुसलमान देश अनुकरण नहीं कर रहे और हम अहमदी मुसलमान इन शिक्षाओं पर अनुकरण करते हैं और उनकी तब्लीग़ करते हैं। अगर इस नियम पर अनुकरण ना किया गया तो दुनिया तीसरी विश्व व्यापि जंग होती देखेगी।अगर हुकूमतों ने अपनी पालिसीयां और कार्यपद्धतियां ना बदलीं तो आप भी इस के नतीज जल्द ही देख लेंगे। बल्कि किसी हद तक तो यह जंग शुरू भी हो चुकी है। सीरिया की जंग की वजह से कई दूसरे देश भी इसका हिस्सा बन गए हैं। लावा उबलना शुरू हो गया है और किसी वक़्त भी फट सकता है।

यह प्रैस कान्फ्रैंस 4 बजकर 55 मिनट तक जारी रही।

सम्मान्नीय मेहमानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात और उनके ईमान वर्धक विचार

इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जो कि रुकावटों को गिराता है और अमन वाला और भाईचारा की गुफ़्तगु का हौसला बढ़ता है, इसलिए एक सच्चे मुसलमान के बारे में यह सोचा भी नहीं जा सकता कि वह दूसरे धर्मों का विरोध करे और उनके मानने वालों पर अत्याचार ढाए, इस्लाम ने कभी और कहीं भी उग्रवाद की शिक्षा नहीं दी और ना ही ज़ुल्म की किसी भी अवस्था में हौसला अफ़ज़ाई की*

आपके भूतकाल में जो अहमदियों के साथ सम्बन्ध थे उन से आपने प्यार, मुहब्बत और भाईचारा की भावना ही देखी होगा,इसलिए इस मस्जिद की बुनियाद के बाद यह भावना और अधिक बढ़ेगी और हमारी इन्सानियत की सेवा और प्यार तथा मुहब्बत का पैग़ाम पहले से बढ़ कर चारों तरफ गूँजेगा, स्थानीय अहमदी मुसलमान

इस मस्जिद के पड़ोसियों के हुक़ूक़ की अदायगी के लिए अपनी कोशिशों में और अधिक इज़ाफ़ा करेंगे*

मेरी दिली दुआ है कि स्थानीय , इलाक़ाई, देशीय और विश्वव्यापी सतह पर सारी धर्मों के लोग दुनिया में अमन का पैग़ाम फैलाने की साझी बात पर मुत्तहिद हो जाएं

मेरे दिल की गहराई से यह दुआ निकलती है कि जब हम लोग इस दुनिया से कूच करें तो हमारे बच्चे और हमारी आने वाली नस्लें हमें प्यार और मुहब्बत के याद करें

वे यह कहने वाले हूँ कि हमारे बुज़ुर्गों ने मानव जाति में प्यार, अमन और भाईचारा को फैलाने और अपने पीछे एक अमन वाला और रोशन दुनिया छोड़ने में कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी*

मस्जिद मसरूर (वर्जीनिया)के उद्घाटन के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनोराएयदा अल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट :अबदालमाजद ताहिर, ऐडीशनल वकील अलतबशीरलनदन)

03 नवंबर2018 ई (दिनांक हफ़्ता)

मेहमानों की हुज़ूर अनवर से व्यक्तिगत मुलाक़ात

प्रैस कान्फ्रैंस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मीटिंग रुम में तशरीफ़ ले आए जहां Dr.Katrina Lantos Swett ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात की। महोदया Tom Lantos Foundation for Human Rights and Justice की प्रैज़ीडैंट हैं और इस से पहले Capitol Hill यू.ऐस. ए के प्रोग्राम जिसमें हुज़ूर अनवर ने ख़िताब फ़रमाया था और शान्ति कान्फ्रैंस लंदन में शामिल हो चुकी हैं।

डाक्टर कटरीना विशेष तौर पर अपने शेड्यूल में तबदीली करके हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात और मस्जिद की उद्घाटन आयोजन में सम्मिलित होने के लिए New Hampshire से आई थीं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपका शुक्रिया कि आपने याद रखा और विशेष तौर पर मिलने के लिए आई हैं।

महोदया ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अमरीका के लिए एक रुहानी मर्हम हैं और अमरीका को इस वक़्त हुज़ूर अनवर की रहनुमाई और नेतृत्व की अशद ज़रूरत है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हम तो अमन चाहते हैं और अमन की स्थापना के लिए कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अमन की तरफ़ क़दम बढ़ाया नहीं जा रहा। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मैंने प्रैस को भी कहा है कि अगर हमने अमन के स्थापना की तरफ़ ध्यान ना की तो हम एक विश्वव्यापी जंग की तरफ़ जा रहे हैं और अब तो कुछ दूसरे ज़िम्मेदार लोग भी इस बात को प्रकट कर रहे हैं कि अब विश्वव्यापी जंग के भय हैं।

महोदया ने अहमदियों पर होने वाले अत्याचारों के बारे में निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर बेशक हिम्मत और सब्र का उच्च नमूना हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पाकिस्तान में अहमदिया कम्यूनिटी स्टेट पर्सी कीवशन का सामना कर रही है। वहां क़ानूनों के द्वारा अहमदियों के हुक़ूक़ छीने जा रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस वक़्त जो दुनिया के हालात हैं हम कम्यूनिटीज़ में नफ़रत के बीज बो रहे हैं। जो कदम उठाए जा रहे हैं इस से अमन तो स्थापित नहीं होगा। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह बड़े देशों की ज़िम्मेदारी है और लीडर होने की हैसियत से आप लोगों की ज़िम्मेदारी है कि किस तरह अमन की तरफ़ क़दम उठाना है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमें आपकी तरह काम करने वाले और अधिक लोग चाहिऐं ना सिर्फ अमरीका में बल्कि दुनिया के और दूसरे देशों में भी।

महोदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को मस्जिद के उद्घाटन पर मुबारकबाद पेश की और बताया कि हुज़ूर अनवर ने यू.ऐस एंबेसडर और अन्य कांग्रस के मेम्बरों से जिस तरह मज़हबी आज़ादी के बारे में बात की इस से उन्हें बहुत ख़ुशी हुई है। महोदया ने हुज़ूर अनवर से वापसी प्रोग्राम के बारे में पूछा। जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। इस सोमवार को वापस जा रहा हूँ।

यह मुलाक़ात 5 बजकर10 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर महोदया ने तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद देश गेम्बिया के एंबेसडर बराए यू. ऐस. ए Hon.Dawda Federa ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात में महोदय की पत्नी और पोलीटिक्ल कौंसिलर भी शामिल थे।

नई हुकूमत के बारे में बात हुई कि किस तरह काम कर रही है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अब गेम्बिया में हम अपना tv चैनल खोल रहे हैं। हम गेम्बियन tv की भी मदद कर रहे हैं। वहां उनको टेक्नीक सिखा रहे हैं और हिदायतें दे रहे हैं।

एंबेसडर महोदय ने निवेदन किया कि जमाअत ने जो वहां स्कूल और हस्पताल खोले हैं इस का देश को बहुत फ़ायदा हुआ है और शिक्षा न ही देश की तरक़्क़ी की बुनियाद है। जमाअत का जो स्कूल (बानजल) तालनडनग कंजाइंग में है, वह देश में बेहतरीन स्कूल है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हम ख़ुदा की लिए मदद करते हैं और ख़ुदा की प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिए काम करते हैं जबकि दूसरे लोगों का इंट्रस्ट दूसरा होता है।

गेम्बिया के एंबेसडर की हुज़ूर अनवर से यह मुलाक़ात 5 बजकर 15 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर महोदय और उनकी पत्नी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार कांग्रेस मैन Gerry Connolly ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया।

महोदय के सवाल पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। तीन सप्ताह पहले अमरीका में आए थे। इस दौरान ग्वेटामाला भी गए और वहां हमने एक हस्पताल की बुनियाद रखी है। इस का उद्घाटन किया। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि ग्वेटामाला बड़ा ख़ूबसूरत देश है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बड़ा ख़ूबसूरत है। महोदय ने निवेदन किया कि अब अगले तीन दिन तक देश में इलैक्शन हो रहा है इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया में इस से एक दिन पहले जा रहा हूँ।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदय ने बताया कि उनके क्षेत्र में आठ लाख के क़रीब लोग हैं और ग़ालिबन वोटर टर्न आउट पच्चास प्रतिशत रहा। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इस का अर्थ है कि अगर अब इलैक्शन के वक़्त वोटर टर्न आउट में इज़ाफ़ा हुआ तो जीतना आसान होगा। अगर वोटर को घर से ले आएं तो फिर आप जीत जाऐंगे।

महोदय ने जमाअत के बारे में निवेदन किया कि यहां अमरीका में आपकी कम्यूनिटी तरक़्क़ी कर रही है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यहां भी और हर जगह तरक़्क़ी कर रही है। हर साल पाँच छ: लाख लोग जमाअत में शामिल होते हैं। बहरहाल जमाअत तरक़्क़ी कर रही है। यह मुलाक़ात 5 बजकर 20 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर महोदय ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

हुकूमत के लोगों और मेहमानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से सामूहिक मुलाक़ात

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लाइब्रेरी में तशरीफ़ ले आए जहां मस्जिद मसरूर का उद्घाटन आयोजन के लिए आने वाले कुछ हुकूमती लोगों और मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाक़ात में निम्नलिखित मेहमान शामिल हुए:

Hala Ayala मैंबर आफ़ वर्जीनिया हाऊस आफ़ डेलीगेट्स

Ruth Anderson मैंबर आफ़ प्रिंस विलियम काओनटी बोर्ड आफ़ सुपरवाइज़रज़

Jeanette Rishell मेयर आफ़ Manassas Park

Maureen Caddigan मैंबर आफ़ प्रिंस विलियम काओनटी बोर्ड आफ़ सुपरवाइज़र

Corey Stewart चेयरमैन आफ़ प्रिंस विलियम काओनटी बोर्ड आफ़ सुपरवाइज़रज़

Martin Nohe मैंबर आफ़ प्रिंस विलियम काओनटी बोर्ड आफ़ सुपरवाइज़रज़

Jeremy McPike सैनेटर बराए स्टेट आफ़ वर्जीनिया

Dawda Fadera, एंबेसडर आफ़ दी गेम्बिया

Adam Manne

यहूदी आर्गेनाईज़ेशन Nershalom Virginia के वाइस प्रैज़ीडैंट

Kathleen Smith मैंबर आफ़ फेयर फॉक्स काओनटी बोर्ड आफ़ डायरैक्टर्ज़

Elizabeth Guzman मैंबर आफ़ वर्जीनिया हाऊस आफ़ डेलीगेट्स

डाक्टर Katrina Lantos Swett प्रैज़ीडैंट आफ़ Tom Lantos Foundation न्याय तथा इन्सानी हुक़ूक़

अब्दुल अज़ीज़ Sachedina चेयर आफ़ इस्लामिक स्टडीज़, जॉर्ज मेसन यूनीवर्सिटी

सम्मान्नीय Gerry Connolly यू.ऐस कांग्रेस मेन

मुलाक़ात के दौरान सारी मेहमानों ने अपना परिचय करवाया।

*प्रिंस विलियम काओनटी के चेयरमैन बोर्ड आफ़ सुपरवाइज़रज़ ने कहा कि मैं हुज़ूर अनवर को इस काओनटी में स्वागत कहता हूँ। मैं इस साल सैनेट की सीट के लिए भी हिस्सा ले रहा हूँ और इस के लिए हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ की दरख़ास्त करता हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

*Martin Nohe ने कहा कि में भी प्रिंस विलियम काओनटी बोर्ड का मैंबर हूँ। मुझे भी अहमदियों के साथ काम करने का अवसर मिला है और मेरे लिए अल्लाह तआला के घर की बुनियाद के ख़्वाब को पूरा करने तक पहुंचाने के लिए काम करना गर्व का कारण है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर महोदय ने कहा कि मेरी काओनटी में भी अहमदी मौजूद हैं। उतनी ज़्यादा संख्या तो नहीं है लेकिन उनकी संख्या में इज़ाफ़ा हो रहा है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि: इस में और अधिक इज़ाफ़ा भी होगा क्योंकि काफ़ी मुहाजिरीन यहां आ रहे हैं। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि हमारी काओनटी में पहले विभिन्न धर्मों और क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले लोग बहुत कम थे लेकिन अब हमारी काओनटी में ऐसे लोगों का बड़ी तेज़ी के साथ इज़ाफ़ा हुआ है जिससे हमारी काओनटी की diversity मैं काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है ।

*Dawda Fadera गेम्बियन एंबेसडर अपनी पत्नी के साथ इस मीटिंग में शामिल हुए। महोदय ने कहा हम अपने देश गेम्बिया में जमाअत अहमदिया की मौजूदगी से हस्पतालों, स्कूलों और मस्जिद के द्वारा बेपनाह फ़ायदा प्राप्त कर रहे हैं। जमाअत अहमदिया हमारे देश में लोगों पर निहायत सकारात्मक असर छोड़ रही है। गेम्बियन हुकूमत और जमाअत अहमदिया के सम्बन्ध बहुत मज़बूत हैं, और इन्हीं सम्बन्धों के आधार पर मैं आज यहां हाज़िर हुआ हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने महोदय का शुक्रिया अदा किया।

*बाबर लतीफ़ साहिब चेयरमैन आफ़ स्कूल बोर्ड इन प्रिंस विलियम काओनटी ने कहा कि मैं हुज़ूर अनवर को यहां स्वागत कहता हूँ। हमारे स्कूल सिस्टम में 91 हज़ार छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और उनमें से काफ़ी अहमदी हैं।

*Adam Manne साहिब synagogue के प्रतिनिधि थे। उन्होंने कहा मैं यहूदी कम्यूनिटी की तरफ़ से दावत पर आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूं।

*डाक्टर Katrina Lantos ने अपने भावनाओं का प्रकट करते हुए कहा आपकी कम्यूनिटी इस देश की तरक़्क़ी में बहुत अहम भूमिका अदा कर रही है। इसलिए आपकी यहां तशरीफ़ लाने पर मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूँ और आपकी तशरीफ़ लाना हमारे लिए गर्व का कारण है।

मेहमानों के साथ यह मुलाक़ात 5 बजकर 35 मिनट तक जारी रही।

मस्जिद मसरूर का उद्घाटन आयोजन

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के बाहरी सेहन में लगाई गई मार्की मैं तशरीफ़ ले गए जहां मस्जिद मसरूर के उद्घाटन के बारे में एक प्रोग्राम का आयोजन किया गया था।

इस आयोजन में विभिन्न जमाअतों से आने वाले जमाअत का ओहदेदारों के अतिरिक्त दो सौ के लगभग मेहमान शामिल थे। इन मेहमानों में निम्नलिखित लोगों शामिल हुए।

यू एस ए कांग्रेस मेन Hon.Gerry Connolly

प्रैज़ीडैंट Tom Lantos फाऊंडेशन आफ़ हियूमन राईट्स ऐंड जस्टिस

एंबेसडर आफ़ गेम्बिया Hon.Dawda Fadera

सैनेटर्ज़ स्टेट आफ़ वर्जीनिया

मैंबर्ज़ वर्जीनिया हाऊस आफ़ Delegates

चेयरमैन DC सिटी कौंसल

मेयर आफ़ Manassas पार्क

मेयर आफ़ Fair Fay

चेयरमैन प्रिंस विलियम काओनटी बोर्ड आफ़ सिपर वाइज़ज़

प्रिंस विलियम और Fair Fay काओनटी बोर्ड के पाँच मेम्बरों

प्रोफ़ैसर अब्दुल अज़ीज़ Sachedina जॉर्ज मेसन यूनीवर्सिटी

जॉर्ज वाशिंगटन योर नैवर सिटी के दो प्रोफ़ेसर

वाइस प्रैज़ीडैंट Jewish Organization

इस के अतिरिक्त डाक्टर्ज़, टीचर्ज़, वकील, पत्रकार, मीडिया के प्रतिनिधि, सैक्योरिटी की संस्थाओं के प्रतिनिधि और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले मेहमान शामिल थे।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय फ़ारान रब्बानी साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला साऊथ वर्जीनिया (यू.ऐस. ए) ने की और इस के बाद अंग्रेज़ी भाषा में इस का अनुवाद पेश किया।

इसके बाद आदरणीय अमजद महमूद ख़ान साहिब नेशनल सेक्रेटरी उमूरे ख़ारजा यू एस ए ने मेहमानों का स्वागत कहते हुए इस आयोजन के बारे में से अपना परिचयात्मक सम्बोधन पेश किया। इस के बाद तीन मेहमानों ने अपने सम्बोधन पेश किए।

*सबसे पहले कांग्रेस मैन Gerry Connolly साहिब ने अपना सम्बोधन पेश करते हुए कहा: मैं हुज़ूर को Prince William County मैं स्वागत कहता हूँ। मस्जिद मसरूर के उद्घाटन का अवसर अपने अंदर निहायत ही भावना रखता है। हुज़ूर अमरीका में इस वक़्त पधारे हैं जबकि हम मुश्किल वक़्त से गुज़र रहे हैं जहां हर दिन कोई ना कोई दुर्घटना होती रहती है। अभी हाल ही में Pittsburgh पेनस्लवीनिया में synagogue में भी दुर्घटना हुई है। हमारे देश को मुहब्बत सब के लिए , नफ़रत किसी से नहीं जैसे शब्द पर ध्यान देने की बहुत ज़रूरत है। हुज़ूर अनवर के सामने विभिन्न वर्गों से सम्बन्ध रखने वाले मेहमान तशरीफ़ फ़र्मा हैं जो विभिन्न सभ्यताओं वाले समाज को स्वागत कहते हैं । हमारे देश का माटो (motto)और निशानी e pluribus Unum है। यह एक लातीनी मुहावरा है जिसका अर्थ है बहुत सी चीज़ों से मिलकर एक हम सब एक समाज हैं, हम सब एक देश हैं। इसलिए हम आज आपकी इस ख़ूबसूरत मस्जिद के उद्घाटन की ख़ुशी में शामिल हैं और आप को स्वागत कहते हैं। आप जो पैग़ाम लेकर आए हैं इस में हमारे लिए भी बेहतरी है।

मुझे यूनाईटिड स्टेटस कांग्रेस में Ahmadiyya Muslim Caucus में शामिल होने पर भी गर्व है। इसी तरह मुझे इस बात पर भी बहुत गर्व है कि हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए जो resolution पेश हुआ था उस की ड्राफ़्टिंग में मेरा भी हिस्सा था। मैं खासतौर पर हुज़ूर अनवर की सारी दुनिया में अमन के स्थापना के लिए कोशिश और जिस तरह आप उग्रवाद और अत्याचारों की भृतसना कर रहे हैं ,इस को सराहता हूं । आपका मज़हबी आज़ादी , इन्सानी हुक़ूक़ और जमहूरीयत के स्थापना का इरादा प्रशंसा योग्य है। आज हुज़ूर की यहां तशरीफ़ आवरी हमारे लिए गर्व योग्य है। शुक्रिया। अपने सम्बोधन के आख़िर पर कांग्रेस मैन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में रैज़ोलीयूशन की कापी भी पेश की जिस पर हुज़ूर अनवर ने महोदय का शुक्रिया अदा किया।

*इसके बाद डाक्टर Katrina Lantos Swett जो कि इन्सानी हुक़ूक़ तथा इन्साफ़ की संस्था Tom Lantos Foundation की

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 14 November 2019 Issue No. 46

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

प्रमुख हैं उन्होंने अपना सम्बोधन पेश किया। महोदया ने कहा: आप सब का बहुत शुक्रिया। निसन्देह इस अवसर पर हाज़िर होना मेरे लिए बहुत ख़ुशी और गर्व की बात है। पिछले कुछ सालों में मुझे हुज़ूर अनवर के साथ चार पाँच बार मुलाक़ात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और जब भी मुझे हुज़ूर की सेवा में हाज़िर होने का अवसर मिलता है तो मैं अमन, प्यार मुहब्बत और आपसी मुहब्बत के भावनाओं ही महसूस करती हूँ।

महोदया ने कहा: कांग्रेस मैन Gerry Connolly की बात को ही में दुहराऊंगी कि हमें इस वक़्त हुज़ूर अनवर के पैग़ाम की पहले से बढ़कर बहुत ज़रूरत है। जब मैं यूनाईटिड स्टेटस के रीलीजस फ़्रीडम कमीशन की सदर थी तो उस वक़्त मुझे जमाअत अहमदिया के बारे में पता चला था। आप सारे लोग जानते हैं कि जमाअत अहमदिया बहुत ही ज़बरदस्त कम्यूनिटी है जिन्होंने दुनिया के हर कोने में इन्सानियत की सेवा और ईमान को पहुंचाया है और यह सारे काम जमाअत अहमदिया अपने ऊपर होने वाले बहुत अत्याचारों के बावजूद पूर्ण करती चली जा रही है। पाकिस्तान में अहमदी नागरिकों को वोट देने के हुक़ूक़ प्राप्त नहीं हैं, उनके सुरक्षा और उनकी पाकिस्तान में रहने के बुनियादी हुक़ूक़ को ख़तरा है जबकि हुकूमत को चाहिए कि वह उनके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करे। हालाँकि पाकिस्तान की इतिहास में जो मशहूर शख़्सियात गुज़री हैं उनमें से सबसे उच्च मुक़ाम प्राप्त करने वाले लोग अहमदी थे। पाकिस्तान में अकेले नोबेल ईनाम पानेवाले साईंसदान अहमदी थे। जिस आदमी ने पाकिस्तान का दस्तूर लिखा वह एक अहमदी क़ानून जानने वाला था। लेकिन इस के बावजूद अहमदी इस देश में बहुत अत्याचारों का शिकार हैं। अहमदी मुझे हमेशा इस सुनहरी नियम को याद करवाते हैं कि बुराई के बदला में बुराई ना करें। ज़ुल्म का मुक़ाबला ज़ुल्म और ग़ुस्सा से नहीं करना बल्कि बुराई का मुक़ाबला अच्छाई के साथ करना है। जमाअत अहमदिया का वजूद ही हमें हमारी इस ज़िम्मेदारी की तरफ़ ध्यान दिलाता है कि हम ने आज़ादी ज़मीर तथा मज़हब की हिफ़ाज़त करनी है।

*इस के बाद वर्जीनिया हाऊस आफ़ डेलीगेट्स की मैंबर Hala Ayala ने अपना सम्बोधन पेश किया। उन्होंने सम्बोधन के आरम्भ में सैनेटर Jeremy McPike को भी स्टेज पर आने की दावत दी। महोदया ने कहा: हुज़ूर अनवर को स्वागत कहना मेरे लिए सम्मान योग्य है और मस्जिद मसरूर का उद्घाटन आयोजन में शामिल होना मेरे लिए आन्नद वाली बात है। मैं अपने गवर्नर Ralph Northam का पैग़ाम लेकर आई हूँ ।

गवर्नर ने इस प्रोग्राम में ना शामिल होने पर अफ़सोस का प्रकट किया है और हुज़ूर अनवर के लिए मुबारकबाद का पैग़ाम भिजवाया है। गवर्नर Northam ने अपने पैग़ाम में हुज़ूर अनवर की दुनिया-भर में अमन की स्थापना , इन्सानियत की सेवा और विश्वव्यापी हुक़ूक़ के सुरक्षा के लिए की जाने वाली कोशिश को सराहा। गवर्नर ने कहा कि वर्जीनिया स्टेट हर मज़हब से सम्बन्ध रखने वाले इन्सान को स्वागत कहती है और हर मज़हब का एक जैसा सम्मान करती है। गवर्नर ने अपने पैग़ाम में जमाअत अहमदिया के मेम्बरों का भी शुक्रिया अदा किया जो कि Food Drives, Clothing Drives का आयोजन करने और ख़ून के तोहफे देने में आगे हैं।

इस के बाद महोदया और उनके साथ सैनेटर McPike ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में गवर्नर की तरफ़ से दिया जाने वाला certificate of recognition पेश किया। इस सर्टीफ़िकेट पर लिखा था कि 3 नवंबर को जमाअत अहमदिया अमरीका वर्जीनिया में अपनी मस्जिद के उद्घाटन के आयोजन मना रही है। जमाअत अहमदिया वर्जीनिया इस मस्जिद के द्वारा से बहुत से सामाजिक कामों में हिस्सा ले रही है। हुज़ूर मुसलमान दुनिया के एक अहम रहनुमा हैं जो अपने ख़ुत्बों, ख़िताबों, अपनी कुतुब और अन्य मीटिंगज़ के द्वारा अमन का पैग़ाम फैला रहे हैं। हम हुज़ूर को Prince William काओनटी में स्वागत कहते हैं।

(शेष.....)

लिपिक के तौर पर ख़िदमत के इच्छुक लोग ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में मुहर्रिर के तौर पर ख़िदमत के इच्छुक लोगों की सूचना के लिए तहरीर है कि

(1)उम्मीदवार की उम्र 25 साल से कम होनी ज़रूरी है और उम्मीदवार की शिक्षा कम से कम 10+2 सैकिण्ड डवीज़न में और कम से कम 45% प्रतिशत नंबर हासिल किए हों। इस से अधिक शिक्षा होने की अवस्था में भी कम अज़ से सैकिण्ड डवीज़न या इस से अधिक नंबर हों।

(2)जामिआ अहमदिया कादियान के छात्र जो मैट्रिक पास करने के बाद जामिया अहमदिया में कम से कम दो साल शिक्षा हासिल करके परीक्षा में कामयाब हो गए हूँ मुकर्रम प्रिंसिपल साहिब जामिआ अहमदिया की तसदीक़ तथा सिफ़ारिश के बाद नियमों के अनुसार दर्जा दोयम की परीक्षा में शामिल हो सकते हैं।

(3)उम्मीदवार का अच्छी लिखाई वाला होना लाज़िमी होगा और उर्दू Inpage कम्पोज़िंग जानना और टाइपिंग रफ़्तार कम से कम 25 शब्द प्रति मिनट होनी चाहीए।

(4)सिर्फ वे उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होंगे जो सदर अंजुमन अहमदिया की तरफ़ से मुहर्रिरीन के लिए लिए जाने वाली परीक्षा और इंटरव्यू में पास होंगे।

(5)जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में बतौर मुहर्रिर ख़िदमत के इच्छुक हों और ऊपर लिखी शर्तों पर पूरा उतरते हों वे दरख़ास्त दे सकते हैं। दरख़ास्त फ़ार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से मंगवा लें। अपनी दरख़ास्त फ़ार्म को पूर्ण करके नज़ारत दीवान में भिजवा दें। दरख़ास्त फ़ार्म मिलने पर इमतिहान का आयोजन किया जाएगा। इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो दरख़ास्तें आयेंगी उन्हीं पर विचार होगा।

(6)निसाब इमतिहान कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोयम के हर भाग में कामयाब होना लाज़िमी है जो निम्नलिखित है। क़ुरआन करीम नाज़रा मुकम्मल, पहला पारा अनुवाद सहित, चालीस जवाहर पारे , अरकान इस्लाम, नमाज़ मुकम्मल अनुवाद सहित, कशती नूह, बरकातुद्दुआ, दीनी मालूमात, मज़मून बाबत अक़ायद जमात अहमदिया , नज़म दुर्रेसमीन (शान इस्लाम) अंग्रेज़ी बमुताबिक़ मयार इंटरमीडीयेट 10+2) हिसाब बमुताबिक़ मयार मैट्रिक , आम मालूमात।

(7)लिखित परीक्षा में सफल होने वालों का इंटरव्यू होगा। ख़िदमत के लिए इंटरव्यू में कामयाबी लाज़िमी है।

(8)लिखित परीक्षा तथा इंटरव्यू दोनों में कामयाबी की अवस्था में उम्मीदवार को नूर हस्पताल कादियान से तिब्बी परीक्षण करवाना होगा और सिर्फ वही उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे।

(9)अगर किसी उम्मीदवार की जमाअत की किसी आसामी में स्लैक्शन होती है तो इस अवस्था में इस को कादियान में अपनी रिहायश का इंतिज़ाम ख़ुद करना होगा।

(10)सफ़र ख़र्च कादियान आने जाने के उम्मीदवार के अपने होंगे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कर सकते हैं।

(नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

मोबाइल9877138347,9646351280 दफ़्तर01872-501130

E-mail: diwan@qadian.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad